

दोहा—कहत मोहिं पितु चरित सब सज्जन लागति लाज ॥

ताते संक्षेपहि कह्यौं, गुणि संतनको काज ॥ २२ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराजरघुराजसिंहजुदेवकृतेश्रीरामरसिका
वल्यांकलियुगखंडे उत्तरार्द्धे उत्तरचरित्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा—एक भक्तका पुनि कहौं, घन आनंद इतिहास ॥

घन आनंदहै नाम जिन, सुनत हरत भवत्रास ॥ १ ॥

मथुरापुरी मलेच्छन घेरे । लाखों यमन खड़े चहुँ फेरे ॥
कारण तासु सुनौ अब सोई । दिल्लीमें शहिजादा कोई ॥
एक समय मथुरापुरी सिधायो । सबै मथुरियन हास बढ़ायो ॥
पनहीको रचिकै यक माला । डान्यो शहिजादाके भाला ॥
सो प्रकोपि निज कटक बोलायो । चहुँकित मथुरापुरी घेरायो ॥
दीन्ह्यो हुकुम नगरमहँ जेते । अब बचि जायँ जियत नहिं तेते ॥
मारनलगे मलेच्छ प्रचारी । बचे न माथुर भटहु भिखारी ॥
घनआनंद वंशीवट पाहीं । बैठे रहे भावना माहीं ॥
राधामाधवके मधि रासा । सखी रूप छवि पीवन आशा ॥
हाथे लीन्हे रहे मुखारी । तेहि क्षणमें भावना पसारी ॥
सोइ मुखारी करमें लीन्हे । दिन रजनी विताय सब दीन्हे ॥
सोइ भावना महँ गिरिधारी । बीरी दीन्ह्यो पाणि पसारी ॥

दोहा—सोइ बीरी मुख मेलियो, लगे मुरावन सोय ॥

सोइ बीरीको रागमुख, प्रगट लख्यो सबकोय ॥ १ ॥

मुखमें भरि आयो जब बीरा । तबहिं ध्यान छोड़्यो मधिधीरा ॥
तेहि अवसर मलेच्छ तहँ आई । मारे खड्ग शीश महँ धाई ॥
उदकि गयो सो खड्ग न काट्यो । तब पुनि मारि ताहि अति डाट्यो ॥
तदपि कटी नहिं तिनकी देही । तब घनआनंद कृष्ण सनेही ॥

कही पुकारि कृष्ण सों वानी । यह तैं कौन रीति अब ठानी ॥
 मोको भूरिमारहै देहू । यत्न कियो छूटै नहिं केहू ॥
 कौन हेतु राखत संसारा । क्यों न बोलावै नंदकुमारा ॥
 यदपि तजन तनु यत्नहु लाग्यो । तदपि न तैं उधार अनुराग्यो ॥
 कह्यो यमन कहैं पुनि गोहराई । अबकी मारहु शिर कटि जाई ॥
 हन्यो यमन अस कटिगो शीशा । सब यमनन विमान नभ दीशा
 घनआनंद तनुकळ्यो न लोहू । सो चरित्र लखि पय्यो न कोहू ॥
 ब्रजमें विदित कथा यह सारी । संक्षेपहि इत लिख्यो विचारी ॥
 घनआनंदके विपुल कवित्ता । अबलों हरत कविनके चित्ता ॥
 घनआनंदकी कथा अनेका । ब्रजमें विदित अहै सविवेका ॥
 जाहि सुननको होय हुलासा । करै सो जाय विमल ब्रजवासा ॥

दोहा—यह घन आनंदकी कथा, वर्णन कियो समास ॥

औरहु भक्तनकी कथा, नेसुक करौं प्रकाश ॥ २ ॥

| इति सिद्धि श्रीमहाराज श्रीरघुराज सिंहजूदेव कृतेश्रीरामरसिकावल्यं
 कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा—विदित जासु जगमें सुयश, परमहंस अवतंश ॥

जेहि मुख ज्ञान उदोत रवि, किय अज्ञान तम ध्वंश ॥

चित्रकूटते रामप्रसादा । परमहंस जिनकी मर्यादा ॥
 रामप्रेम मद मत्त सदाहीं । रहै जगत जानै कछु नाहीं ॥
 पूरवके राजा कोउ आहीं । लहि सत्संग तज्यो जगकाहीं ॥
 चित्रकूट महँ कराहीं निवासा । पंडित बड़े शास्त्र सब श्वासा ॥
 तुलसी कृत रामायण देखी । कियो तासु अभ्यास विशेषी ॥
 और सकल पुस्तक दै डारे । तुलसी कृत महँ प्रीति पसारे ॥
 नीचहुँ जाति जो बांचै कोई । बैठै जाय अवशि मुदमोई ॥

यहि विधि कालक्षेपको करते । चित्रकूट निवसे सुख भरते ॥
रहै शिष्य यक नरहरिदासा । चुटकी मांगै भोजन आसा ॥
चुटकी मांगि मांगि नित लावै । रामप्रसाद सुसाधु खपावै ॥
अन्न भवन महुँ वचै न वासी । जो आवै तेहि देहि हुलासी ॥
सावन मास कबहुँ अधराता । वर्षि रहे वन घेरि अवाता ॥

दोहा—कुटी निकट अवसर तहीं, आये संत पचाश ॥

जय जय सीताराम अस, बोले भोजन आश ॥ १ ॥
परमहंस सुनि संतन वानी । नरहरिसों बोल्यो मतिखानी ॥
ढूँढ़ि भवन महुँ भोजन देहु । संत निराश फिरै नहिं केहु ॥
नरहरि कह्यो कछु घर नहिं । भीतर का ढूँढ़न हम जाहीं ॥
रामप्रसाद कह्यो तू जावै । जो पावै सु ढूँढ़ि लै आवै ॥
नरहरि कह्यो कहहु तुम कैसे । होय नदेहु होय कहूँ ऐसे ॥
रामप्रसाद कह्यो तू जावै । कछु नहिं पावै तो फिरि आवै ॥
तब नरहरि उठि भीतर गयऊ । अन्न विविध विधि देखत भयऊ ॥
बनी मिठाई विविध प्रकारा । पय दधि साकहु अन्न अपारा ॥
सिता लवण घृत ईधन ठेरी । लखि विस्मित मति भइ तेहि केरी ॥
लौटि परयो पद बोल्यो वैना । नाथ उतै कमती कछु हैना ॥
रामप्रसाद साधु सब बोली । दियो केंवार कोठरी खोली ॥
संतन कह्यो लेहु मन जोई । रामप्रताप कमी नहिं होई ॥

दोहा—साधु सबै परि चरण युत, लिय जितनो मनकीन ॥

भोजन करि मोदित भये, पथ हित औरहु लीना ॥ २ ॥
कमी कोठरी भै नहिं साजू । भोर संत गे सहित समाजू ॥
कोऊ तासु भेद नहिं जाने । सुनि सुनि सब अचरज मन माने ॥
एक दिवश श्रीरामप्रसादा । जानन हित कामद मय्यादा ॥
उपर गवनहित गिरि चढ़ि चलेऊ । बीचहिं संतरूप हरि मिलेऊ ॥

कह्यो कवन हित उपर सिधारो । क्यों गिरिकी मय्याँद बिगारो॥
 रामप्रसाद कह्यो नहिं मानो । चल्यो शैलके उपर तुरानो ॥
 गयो एक तरुवरके मूला । गिन्यो पषाणहि उखरी कूला ॥
 चलन समर्थ रही कछु नहिं । तब संशय उपजी मनमार्ही ॥
 तब सोइ साधु फेरि प्रगटाना । कहत भयो कछु कहो नमाना॥
 रामप्रसाद विलखिं अस गायो । नहिं मान्यो ताको फल पायो॥
 तब सो ओषधि दियो लगाई । जसकी तस समरथ है आई ॥
 फेरि साधु भो अंतर्धाना । रामप्रसाद गुन्यो भगवाना ॥

दोहा—आय मिले हरि मोहिं इत, जान्यो नहिं अयान ॥

अस कहि रामप्रसाद तहँ, कीन्ह्यो रुदन महान ॥३॥
 तब पुनि साधुरूप हरि आये । रामप्रसाद कह्यो परि पाये ॥
 तुमहौ राम मिले करि दाया । हरहु मोर ममता मद माया ॥
 तब प्रभु लीन्ह्यो अंक लगाई । तैं हसि मोर परम प्रिय भाई ॥
 अबै कछुक दिन जनन उधारो । अंतकाल ममधाम सिधारो॥
 अस कहि हरि निज रूप छिपायो।रामप्रसाद धाम निज आयो॥
 चित्रकूट सहँ कियो निवासा । रामभक्तिको करत प्रकाशा ॥
 करहिं अर्थ रामायण केरे । जुरहिं सुनन हित संत चनेरे ॥
 रामभक्तिकर करि उपदेशा । करवावहिं दृढ़ भक्ति प्रवेशा ॥
 मज्जहिं मंदाकिनि नित जाई। निज कर करि कैकर्य सदाई ॥
 करहिं रामरस रोजहि पाना । यहि विधि नियरायो निरजाना॥
 जब कछु रोग शरीरहि आयो । तब चढ़ि ऊंच गेह गोहरायो॥
 जय जय सीताराम सुशोरा । छायो चित्रकूट चहुँ ओरा ॥

दोहा—फूटिगयो ब्रह्मांडतेहिं,गयो रामके धाम ॥

वरण्यो रामप्रसादको,यह मैं चरित ललाम ॥ ४ ॥

इति सिद्धिशीमहाराजाधिराजरघुराजसिंह जूदेवकृतेश्रीरामरसि

कावल्यांकलियुगखंडेउत्तरचरित्रेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दांहा-दूजे रामप्रसादको, कहौं शुभग इतिहास ॥

रामायण नैष्टिक रहे,रह्यो अवधमें वास ॥ १ ॥

रहे उपासक जनकलली के । ध्यान करैं नित तापद हीके ॥
 बीतिगयो यहिविधि कछुकालावसत अवध में प्रेम विशाला ॥
 इक दिन सीता दर्शन आसा । सरयूके तट कियो उपासा ॥
 भये निरंखु तहैं व्रत साता । प्रगटी जनकलली विख्याता ॥
 निज कर विंदु दियो तेहिं भालासो नहिं मिथ्यो परे जलजाला ॥
 तासु संपदा महुँ अबलोहूँ । भाल विंदु जाहिर सब कोहूँ ॥
 जेहिं क्षण सीता दर्शन पाये । तेहिं क्षण उठि आसन कहूँ आये ॥
 भये तासु पद सत्य सनेही । तन मन अर्पि दियो वैदेही ॥
 एक दिन सरयू बाढ़नलागी । उठे न सीयचरण अनुरागी ॥
 तहँते कोशन जल बढिगयऊ । रामप्रसाद परश नहिं भयऊ ॥
 देखि सबैं अति अचरज माने । सीय अनन्यभक्त पहिचाने ॥

दोहा-सुनहु और गाथा विमल, जेहि विधि रामप्रसाद ॥

हनुमत सौं रामायणहि, पढ़्यो सहित अहलाद ॥२॥

बाई इक दक्षिणते आई । रामप्रसाद चरण शिरनाई ॥
 कै शंका पूछ्यो यहि भांती । लिखी जो सुंदर कांडहि पाती ॥
 श्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभुभुज करिकर समदशकंधरा ॥
 इहां वीरताको नहिं खोजू । कौन हेतु कह श्यामसरोजू ॥
 भवन एक अति दीख सुहावा । हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

रामनाम अंकित गृह, सोभा वरणि नजाय ॥

नवतुलसीके वृंद तहँ, देखि हर्षि कपिराइ ॥ ३ ॥

रह्यो शपथ रावणको ऐसो । रहै जगतमें धर्म न कैसो ॥
 लंका मध्य विभीषण मंदिर । राम नाम अंकित किमिसुंदर ॥
 कियो युगल शंका जब बाई । रामप्रसाद सके न बताई ॥

राजापुरकहँ सो चलि आये । संकटमोचन पद शिरनाये ॥
 कियो तीनि व्रत हनुमत नेरे । अंतर्ध्यान पवनसुत टेरे ॥
 कहहु कवन हित करौ उपासा । रामप्रसाद कह्यो सहुलासा ॥
 समाधान कै शंका केरो । अवहीं देव बताय निवेरो ॥

दोहा—तुलसी कृत रामायणौ, तुम सब देहु पढ़ाय ॥

तौ जनु दीन्ह्यो दान जिय, पवनपूत कपिराय ॥ ४ ॥
 पवनपूत तव वचन वखाना । समाधान सुनिये मतिवाना ॥
 मानसरोवर रावण आयो । दुर्वासा तहँ ध्यान लगायो ॥
 रावण इंदीवर्ण उखारयो । दुर्वासा तव नयन उधारयो ॥
 कह सकोप रावणसों वानी । वृथा विगान्यो उत्पल खानी ॥
 मानसरोवर मुनिन विहारा । इंदीवरहै मीचु तुम्हारा ॥
 विदित सीय कह यह सब हेतू । ताते भुज उपमा कहिदेतू ॥
 दूसर समाधान अब सुनिये । यामें कछु संदेह न गुनिये ॥
 रावण जीत्यो इंद्रहि जाई । लूटि भंडार लंक महँ भाई ॥
 नाती सुतन वस्तु सब दीन्ह्यो । प्रभु वराह मूरति यक चीन्ह्यो ॥
 दियो विभीषणकाहिँ बोलाई । कह्यो विभीषण तव शिरनाई ॥
 जो मोहिँ देहु तौ अस कहिदीजै । अपने मनकी सब करि लीजै ॥
 रावण कह्यो करहु चितचाहा । तुम्हें न होई कछु दुख दाहा ॥

दोहा—तवहिँ विभीषण मुदित है, नवमंदिर बनवाय ॥

राम नाम अङ्कित भवन, दिय वराह पधराय ॥ ५ ॥
 धर्म अनेक करन सो लाग्यो । रह्यो नरावणके भय पाग्यो ॥
 समाधान ये युगल प्रधाना । विदित सो सरस्वति वायु पुराना ॥
 कांडन प्रति वाइस चौपाई । तुलसी कठिन रमायण गाई ॥
 सो सब तुमको देव पढ़ाई । राम कृपा औरहु लगिजाई ॥
 रामप्रसाद सुनत चितचायन । पवनपूतसों पढ़ि रामायन ॥

आये अवध बहोरि सुखारी । वार्देकी शंका निवारी ॥
 विरच्यो रामायणको टीका । अवध माहँ अवलों है नीका ॥
 अवध माहँ वसिकै बहुकाला । गावत राम नाम गुण माला ॥
 काल पाय ध्यावत रघुवीरा । गो बैकुंठहि त्यागि शरीरा ॥
 रघुपति रसिक धन्य जग प्रानी । गावत जासु सुयश सुखदानी
 धन्य धन्य संतन गुणगाथा । जेहिं गावत जन होत सनाथा ॥
 श्रोता तुमहु धन्य सब कोऊ । संत कथा जाकी रुचि होऊ ॥

दोहा—संत रामपरसादके, अहैं अमित इतिहास ॥

मैं समास वण्योँ इतै, सुनहु सबै सहुलास ॥ ६ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृतेश्रीराम
 रसिकावल्योङ्कलियुगखंडे उत्तरचरित्रे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा—अब श्रीहरिगुरु नाम जेहिं, नाथ मुकुंदाचार्य ॥

तासु चरित वर्णन करौं, साधक सिंगरो काय्य ॥ १ ॥

श्रीहरिगुरु मुकुंद मम स्वामी । कृपापात्र विनतासुत गामी ॥
 जगजीवन लखि परम अनाथा । प्रगटे कनउज देशहि नाथा ॥
 कछुक कालमें भयो विरागा । हरिपदमें उपज्यो अनुरागा ॥
 कुल परिवार गेह तजि दीन्ह्यो । कछु दिन गंगा सेवन कीन्ह्यो ॥
 पुनि अस मन विचार किय नाथा । दरश करहुँ नीलाचल नाथा ॥
 करत पर्यटन देशनमाहीं । देत ज्ञान बहु लोगन काहीं ॥
 नीलाचल कहँ गये कृपाला । दरशन लै जन भये निहाला ॥
 लै दरशन जगदीशहिं केरो । बसे सहित आनंद घनेरो ॥

दोहा—तहँ श्रीराज गोपाल गुरु, निज ढिग प्रभुको आनि ॥

कियो समाश्रय मुदित मन, महत् पुरुष पहिचानि ॥ २ ॥

तहां नाथ कछु कालहि माहीं । पढ़्यो निखिल वेदांतन काहीं ॥

इतिहासन पुराण प्राचीने । औरहु भक्ति ग्रंथ पढ़िलीने ॥
 सेवन कराहैं सो महाप्रसादा । रहाहैं यकांत सहित अढादा ॥
 होरेंविमुखन कहैं करि उपदेशा ॥ दियो प्राप्ति करि श्रीपति देशा ॥
 सिखवत जनन भक्तिकी रीती । यहि विधि गयो काल कछु बीती ॥
 श्रीगुरुराज गोपाल विज्ञानी । यह अपने मनमें अनुमानी ॥
 सब आचार्यन निकट बोलायो । सभा मध्य अस वचन सुनायो ॥
 मम स्थान अधिपके लायक । कियो मुकुंदहि श्रीरघुनायक ॥

दोहा—कृपापात्र जगदीशके, येहैं ज्ञान अगार ॥

इन्हैं सौंपि दीवो उचित, और न कछु विचार ॥ १ ॥
 सो सुनि सब सम्मत यह कीन्हे । पदवी आचारजकी दीन्हे ॥
 कह्यो बहुरि तिनको गुरुज्ञानी । यह ऐश्वर्य लेहु गुणखानी ॥
 सो न लियो गुरु आयसु मांगी । ह्वांते चले कृष्ण अनुरागी ॥
 आये तीर्थराज महुँ नाथा । तहां कियो बहु जनन सनाथा ॥
 पुनि वदरीवन कहैं प्रभु जाई । रहे तहां कछु दिन चित लाई ॥
 हरिद्वार लोहितपुर ह्वैकै । नैमिष कुरुक्षेत्र थल ज्वैकै ॥
 अवधपुरी औ जनकनगरमहुँ । कियो वास एकांत सो थलमहुँ ॥
 पुनि मथुरा कहैं गये कृपाला । तहां कियो सत्संग विशाला ॥

दोहा—तहँ मम पितु गुरु नाम जेहि, प्रियादास मुनिराज ॥

ब्रजमंडल विचरत मिले, लेसँग संत समाज ॥ ४ ॥
 प्रियादास बोले वरज्ञानी । तुमहौ सकल ज्ञानके खानी ॥
 भनहु भागवत कर सप्ताहा । सब संतन मधि होय उछाहा ॥
 सो सुनि मुदित कीन आरम्भा । रचि तहँ सप्तलोकको खम्भा ॥
 तामें शुक यक बैठयो आई । अरु यक अहि तहँ परयो दिखाई ॥
 तिन लखि प्रियादास कह वानी । कथा सुनन आये दोउज्ञानी ॥
 तब अहि आयखम्भपै लपट्यो । यदपि भक्ष पै शुकहि नझपट्यो ॥

होत अरंभ नितै दोउ आवैं । कथा समाप्त भये दोउ जावैं ॥
जब सप्ताह समाप्त भयऊ । तेहिं दिन दोऊ तनु तजि दयऊ ॥

दोहा—यह अचरज लखि संत सब, मुक्त गुण्यो दोउ काहिं ॥

हरिगुरुकी प्रियदासकी, स्तुति करी तहांहिं ॥ ५ ॥

कछु दिनवसि तहँफेरिकृपाला । गंगातट कहँ चले उताला ॥
यक थल ब्रह्मशिला जेहिं नामा । गंगातट सुंदर सुखधामा ॥
ताके निकट बसे प्रभु आई । पुरवासी सब खवरिहि पाई ॥
आये सकल किये परणामा । दरशपाय पूजे मन कामा ॥
कह्यो न यह थल निवसन योगू । इहां न आवहिं दिवशहुलोगू ॥
रहत ब्रह्मराक्षस यहि ठामा । महा भयानक तनु छुत छामा ॥
जो कोउ वसत इहां दिन राती । मारत तेहि प्रत्यक्ष चढ़िछाती ॥
चलहु वेगि वसिये यहि ग्रामा । करहु पवित्र सकल जन धामा ॥

दोहा—विहँसि कह्यो प्रभु अब अवशि, करिहौं यहीं निवास ॥

सब थलमें निवसत सदा, रघुपतिरमा निवास ॥ ६ ॥

ब्रह्मशिला मधि अयन पुरानो । रहत रह्यो तहँ ब्रह्म महानो ॥
तहँ बास कीन्ह्यो प्रभु जाई । अतिरमणीय देखि सुखपाई ॥
तहां ब्रह्मराक्षस निशिआयो । प्रभुहिं निरखि हर्षित गोहरायो ॥
कियो कृतारथ मोहिं कृपाला । वसहु नाथ यहि धाम विशाला ॥
यहि थलमहँ बाँचहु सप्ताहा । मोहिं तारिदीजै मुनिनाहा ॥
सुनत वचन दाया उर आई । दियो ताहि सप्ताह सुनाई ॥
सुनत ब्रह्मराक्षस गति पाई । पुरवासिन उर विस्मय आई ॥
शरणागत भे सब जन आई । लहे अंत ते पद यदुराई ॥

दोहा—यहि विधि प्रभुके वसत तहँ, सूर्य प्रसादहि नाम ॥

आयो प्रभुके निकट सो, जान चहत हरिधाम ॥ ७ ॥

कह्यो नाथ सो मोहिं गति देहू । बाँचि भागवत यह यज्ञ लेहू ॥

प्रभु कह श्रम हैहै अति मोको । कौन प्रकार सुनैहों तोको ॥
 द्विज कह तुम्हें श्रमै भरि हैहै । मेरो तो सब विधि बनिजैहै ॥
 सोसुनि करुणा करि मम नाथा । किय अरंभ सप्ताह सुगाथा ॥
 रह्यो सात दिन निर्जल द्विजवर । है यकाग्र ध्यायो पद यदुवर ॥
 सतयें दिन शरीर तजि दीन्ह्यो । द्विजको मुक्ति जानि जन लीन्ह्यो
 कबहुँ गंग मज्जन हित स्वामी । गमने ध्यावत अंतर्यामी ॥
 तहां मृतक एक बालक लीन्हे । तासु जनक जननी दुख भीने ॥

दोहा—देखि नाथको रुदन करि, गहे कमल पद जाय ॥

कह्यो राखिये वंशमम, दीजै याहि जिआय ॥ ८ ॥

प्रभुकह मृतक नहै यह बालक । हैहै यह तुवकुलको पालक ॥
 देख्यो वसन टारि मुखताको । रोवत लखि फल गुन्यो कृपाको ॥
 सुतको लै जननी गृह आई । बजन लगी आनंद बधाई ॥
 ऐसे चरितन करत अपारा । ब्रह्मशिला महँ वसे उदारा ॥
 तहँ लक्ष्मी प्रपन्न विज्ञानी । भयो समाश्रित प्रभु पहिंचानी ॥
 प्रभु पढ़ाय भागवत पुराना । दीन्ह्यो ताहि विमल विज्ञाना ॥
 सो विचरत विचरत महि माहीं । आयो रीवा नगरहि काहीं ॥
 सो सुनि मो पितु आदर करिकै । राख्यो निज भवनहि मुदभरिकै ॥

दोहा—सो प्रभुके सब चरित वर, दीन्ह्यो पितहि सुनाय ॥

सो सुनि तिनके दरशको, कीन्ह्यो मन हरषाय ॥ ९ ॥

मम पितु कह लक्ष्मी प्रपन्नसों । आवहिं केहि विधि है प्रसन्न सों ॥
 जबलगि वैनिहि ममपुर आवहिं । तबलगिकेहि विधिसुतहरि ध्यावहिं
 सो कह तबलगि मैं उपदेशू । करिहों राउर मानि निदेशू ॥
 इमि कहि मोहिं दैकै कछु ज्ञाना । गमन कियो पुनि पुर भगवाना ॥
 द्विज रघुवर प्रपन्न मतिधामा । यथा लाभ महँ पूरण कामा ॥
 ताको मम पितु दीन निदेशू । स्वामी कहँ आनहु मम देशू ॥

सो कह मैं अवश्य लै ऐहों । तुव मन कामहि पूर करैहों ॥
असकहि द्विज गमनेउ हर्षाई । प्रभुसों कह दीनता देखी ॥
दोहा—रीवां नगर नरेश प्रभु, नाम जासु विशुनाथ ॥

सो चाहत दर्शन करन, चलि तहँ करिय सनाथ ॥१०॥
सुनि रघुवर प्रपन्नके वयना । आयसु दियो नाथ मुद अयना ॥
नृपति नगर गमनहुँ मैं नाहीं । पै नृपप्रेम सोच मन माहीं ॥
रीवांनगर विशेष सिधैहों । भक्त भूपको दर्शनदैहों ॥
अस कहि करि दाया मम नाथा । आय सबन दीन्ह्यो मुदगाथा ॥
वर हरिमंदिर लक्ष्मण बागा । वसे तहां युत हरि अनुरागा ॥
पितु मम जाय दरश तहँ लीन्है । भमहित विनय वचन कहि दीन्है
प्रभु प्रसन्नहै कह शुभ वानी । तुव सुत कह यहि थल मष ठानी
विधिपूर्वक चक्रांकित करिहों । दै हरिमंत्र मोद उर भरिहों ॥

दोहा—संवत अष्टादश शतै, अठानवहिको साल ॥

कातिक शित एकादशी, दियमोहि मंत्र विशाल ११॥
औरहु जे मम बंधु अपारा । करिकै कृपा तिनहि उद्धारा ॥
मंत्री सुभट आदि मम जेते । प्रभुके शरणागत भे तेते ॥
सोनभद्र तट देश नवेला । तहां वसैं बहु अबुध बवेला ॥
तिनके गृहमें यह कुलरीती । हरितजि करहिं प्रेतसों प्रीती ॥
सुत व्रत बंधन करहिं निकेतू । मानहिं यही मरणकर हेतू ॥
तुलसी पूजहिं विधवा नारी । सधवा डारहिं बेगि उखारी ॥
तहां गाँव यक देउरा नामा । बहु गिरि मधि दुर्गम वह ठामा ॥
तहां नाथ यक समय पधारे । तिन पर कृपा करन चित धारे ॥

दोहा—तहँ प्रभुके दरशन लिये, आये सब यक साथ ॥

पाय दरश सुख छायेकै, ह्वेगे सबै सनाथ ॥१२॥

गई कुमति भइ शुभमति भारी । प्रेमबीज उर बयो मुरारी ॥

होन समाश्रय को चित दीन्हे । प्रभुसों विनय वार बहु कीन्हे ॥
 तिनकी लंखि दीनता महाई । भई दया दिय मंत्र सुनाई ॥
 तबते तहँके लोग लोगाई । करनलगे हरिभक्ति सुहाई ॥
 अनाचार सब तजि तिन दीन्हे । ज्ञानवान ह्वै हरिकहँ चीन्हे ॥
 पुनि देवराधिप सुवन बोलाई । दै शासन व्रतबंध कराई ॥
 मेटी मरण भीति तिनकेरी । तिनपै कीन्ही कृपा वनेरी ॥
 पुनिरीवा नगरहि प्रभु आये । बसत तहां कछु काल बिताये ॥

दोहा—यक दिन मज्जन करन सरि, गयो पुजारी प्रात ॥

अति कराल तहँव्याल बड़, डस्यो करन जिय घात १३
 गिरचो आय सो प्रभुपद पाहीं । कह्यो नाथ रक्षहु मोहिं काहीं ॥
 प्रभु कह यहि हरिमंदिर माहीं । सोचहि मति लगिहै विष नाहीं ॥
 नेकहुँ विषनहिं तेहि सरसानो । हरिपूजन लाग्यो हरषानो ॥
 लिय वचाय द्विजके इमि प्राना । यहि विधि चरित कियो प्रभुनाना ॥
 पुनि जगदीश पुरी कहँ जाई । हरिदर्शन किय आनंद छाई ॥
 पुनि दक्षिण यात्रा प्रभु कीन्ह्यो । दिव्य मूर्तिके दर्शन लीन्ह्यो ॥
 रंगनाथ प्रभु प्रथम पधारचो । पुनि तोतादिक जाय निहारचो ॥
 करत करत तीरथ बहुतेरे । पहुँचे पद्मनाभके नेरे ॥

दोहा—तहां रह्यो यक देशमें, रामराज जेहिं नाम ॥

सो प्रभुपदहि प्रणाम करि, मांगी भक्ति ललाम ॥ १४ ॥
 ताहि भक्ति शिक्षा दै स्वामी । तहँते चले सुमिरि खगगामी ॥
 विचरत विचरत पुनि यहि देशू । आये करत ज्ञान उपदेशू ॥
 ग्राम अमर पाटन जेहिं नामा । तहँ जब आये पूरण कामा ॥
 तहँ मैं जाय विनय बहु करिकै लायो निज पुर प्रभु पद परिकै ॥
 विनय करी करजोरि वहोरी । राज्य करनकी नहिं मति मोरी ॥
 ॥ तब प्रभु कह छोंड़हु दुचिताई । श्रीपति कृपा सबै बनिजाई ॥

मोहुसम लहि प्रभु कृपा महाई । राज्य भार शिर लियो उठाई ॥
मोपर करिकै कृपा कृपाला । लक्ष्मणवाग रहे कछु काला ॥

दोहा—तुलसीरामहि वैद्य सुत, राधेकृष्णहि नाम ॥

तेहि सुत रघुनंदन भये, बालहि ते मतिधाम ॥ १५ ॥
भयो समाश्रित प्रभुपद जाई । पढ़्यो भक्ति मारग सुखदाई ॥
एक समय तेहि रोग सतायो । सन्निपात भो बोलि न आयो ॥
तब स्वप्नहि द्वै पुरुष बताये । वचिहैं नहिं विन गुरु ढिग जाये ॥
तेहि घरके तेहिको धरि याना । प्रभु समीपको किये पयाना ॥
ताको प्रभु समीप धरि दीन्हे । करि रोदन विनती बहु कीन्हे ॥
प्रभुके दरशन पावत सोई । उठि कह अब मोहिं कछु नहोई ॥
गई व्याधि मिटि रही नथोरी । लहि आयसु गृह जैहों दोरी ॥
अस कहि रघुनंदन घर आयो । तेहि परिवार लोग सुख पायो ॥

दोहा—पुनि मम अंतहपुर महल, होत रहै यह हाल ॥

प्रसव भये दिन चारिमैं, नारि होहिं वश काल ॥ ६ ॥
यहि विधि भई मृतक त्रय नारी । तब प्रभु दासन आरतहारी ॥
जानि समय निज निकट बोलाई । राख्यो लक्ष्मण बाग टिकाई ॥
नाथ कृपा प्रसवाहिके काला । ग्रस्यो न तियको काल कराला ॥
आनंद सहित नारि गृह आई । मेरे गृहमें बजी बधाई ॥
पुनि कछु काल वसे पुरमाहीं । करत कृतार्थ मम कुल काहीं ॥
रामायण भागवत सुनाई । दीन्ही भक्ति राह दरशाई ॥
रामकृष्णको कीर्तन शोरा । मच्यो बघेल खंड चहुँ ओरा ॥
पुनि हरिगुरु कछु काल बिताई । गमने ब्रह्मशिला सुख छाई ॥

दोहा—कछुक काल लगि नाथ मम, ब्रह्मशिला सुखधाम ॥

सुरसरि तट निवसत भये, सब विधि पूरण काम ॥ ७ ॥
मैं पुनि गयो विते कछु काला । प्रभुदर्शन करि भयो निहाला ॥

प्रभुसों विनय करी कर जोरी । पुरी पुनीत करहु चलि मोरी ॥
 सुनि मम विनय दियो मुसकाई । कह्यो यकांतहिं मोहिं बोलाई ॥
 करिहौं मैं उत अवशि पयाना । हरि दासन सबठौर समाना ॥
 अत कहि प्रभु रीवां पगु धारे । हमहुँ नाथके साथ सिधारे ॥
 वोनइससै गेरहि कर साला । मधुशित एकादशी विशाला ॥
 कृष्णप्रपन्न शिष्य कहँ बोली । कह्यो आपनी आशय खोली ॥
 रामानुज स्वामी निशि आई । मोहिं अस शासन दियो सुनाई ॥

दोहा—लीला वैभवमें वसत, बीति गयो बहु काल ॥

चलहु त्रिपाद विभूतिको, बोल्यो त्रिभुवनपाल ॥१८॥
 मैं करिहौं वैकुंठ पयाना । विते बहुत दिन विन भगवाना ॥
 कृष्ण प्रपन्न कह्यो करजोरी । यह प्रार्थना सुनहु प्रभु मोरी ॥
 चित्रकूटकी तीर्थ प्रयागा । अथवा ब्रह्मशिला बड़भागा ॥
 जहां आपुको आयसु होई । तहँ पहुँचैहैं हम सब कोई ॥
 तब बोले हरि गुरु मुसक्याई । केहिं थलहैं नहिं श्रीयदुराई ॥
 अपरिछिन्न जो हरि कहँ मानहुँ । मम पयान तो अनत न ठानहुँ ॥
 कृष्ण प्रपन्न फेरि करजोरी । कह्यो सुनहु विनती यह मोरी ॥
 केहि दिन आप विकुंठ सिधरिहैं । तहँके वासिनको सुख भरिहैं ॥

दोहा—तब कह कृष्णप्रपन्न सों, श्रीहरि गुरु मुसकाय ॥

अक्षय तृतियाको अवशि, हम देखब यदुराय ॥१९॥
 सोइ जब अक्षय तृतिया आई । तब हरि गुरु वैष्णवन बोलाई ॥
 झांझ आदि बाजन बजवाई । रामकृष्ण कीर्त्तन करवाई ॥
 एक मुहूरत लग कर जोरी । नयन मूँदि श्रीपतिहिं निहोरी ॥
 करि मुद्रा संहार तहांहीं । आतम अर्पण करि हरिकाहीं ॥
 पुनि दोऊ कर नाथ उठाई । कृष्णदूत निज निकट बोलाई ॥
 अर्चा विग्रहनिज शिर थापी । ऊर्ध्व पुंड्र दै प्रभा अमापी ॥

शुद्ध कुशासन महँ थिर हैंकै । कृपादीठि दासन पर ज्वैकै ॥
द्वितिया तिथिको नाथ विताई।उत्तर दिशि पग करि सुखछाई॥
दोहा—रुद्रखंड शशि संवतै, माधव मास अकुंठ ॥

अक्षय तृतियाको गये,श्रीहरिगुरु वैकुंठ ॥ २० ॥
तिनको लहि परताप प्रचंडा । रामानुज सिद्धांत अखंडा ॥
यहू देशमें प्रचरो पूरो । नास्तिक वाद भयो सब दूरो ॥
प्रभु दासनकी भवकी भीती । मिटी सकल भै हरिपद प्रीती ॥
को कृपालु ऐसो जगमाहीं । भवसागर ताऱ्यो गहि बाहीं ॥
यहि विधि प्रभुके चरित अपारा।वरणि सकहि नहिं सुखहुँ हजारा
प्रभु पद पोत पाय मुदमाहीं । तरिहौं मैं भवसागर काहीं ॥
श्रीप्रभु पद प्रताप बल पाई । आनंद अंबुनिधै सुखछाई ॥
विन श्रम मैं विरच्यों सुखसारा।हरियश सहित सुमति विस्तारा॥
सोरठा—जय प्रभुपद अरविंद, दरन कठिन त्रयतापके ॥

निज जन मनहिंमिर्लद,नित अनंद मकरंद प्रद॥२१
श्रीहरिगुरुको चरित बनाई । दियो कछुक संक्षेप जनाई ॥
लघु मति मम प्रभु चरित अपारा । किमि वरणों संयुत विस्तारा
जग मंडल जिन सुयश अखंडा।जासु शरण महँ नहिं यमदंडा ॥
भक्ति शास्त्र आचारज सोई । निज गुरु इव मान्यो सब कोई॥
जिनको सुयश गाय संक्षेपा । धोयो तनु कलिकलमष लेपा ॥
यह संप्रदा सदा चलि आवै । निज गुरु चरित अंत महँ गावै॥
रच्यों यथा मति मैं यह ग्रंथा । नहिं दूषिहैं जे थिति सत्पंथा ॥
मैं नहिं कछू काव्य गति जानौं।निज गति लखि मूरुख अति मानौं
पै सज्जन कीन्है अति दाया।निज पद रज दै किय शुचि काया
दीन्ह्यो मोहिं निदेश यह नीको । संत सुयश तजि वर्णव फीको॥
ताते संत सुयश निर्माणा । कीन्ह्यो कछुक रह्यो जस जाना ॥

मैं जो निज अघ करौं बड़ाई । वितै जन्मबहु तउ न सिराई ॥

दोहा—भयो राजकुल जन्म मम, धन यौवन मद घोर ॥

अस पांवर पावन करत, यक वसुदेव किशोर २२ ॥

सो वसुदेव तनय पद कंजा । जिनको मन मलिंद मनरंजा ॥
तिनके पद भवसागर माहीं । तरणीसम मम तारन काहीं ॥
कौन संत सम दीनदयाला । सहि दुखदाहि दीन दुख माला ॥
तिनको यश वर्णत न अघाऊं । कलिदव जरत सुधा सर पाऊं ॥
अबै और सज्जन वर जेते । देखे सुने मोरहु तेते ॥
तिनको सुयश कह्यो नहि भाई । तासु हेतु मैं देहु सुनाई ॥
हरिगुरु चरित समापत करिकै । वर्णव और चरित श्रम भरिकै ॥
कवि संप्रदा रीति यह नाहीं । ताते ग्रंथहु अंत यहांहीं ॥
बाकी चरित जे संतन केरे । अतिशय विमल दीखश्रुतमेरे ॥
कहिहौं तिनके चरित सुहावन । वर्त्तमान रसिकावलि पावन ॥
श्रोता तुमसब मोहिं पियारे । जे मम ग्रंथ सुनन पगु धारे ॥
तुम कीन्ह्यो उपकार हमारा । सुन्यो ग्रंथ गुणि शुद्ध अपारा ॥

दोहा—वार वार कर जोरि कै, तुमको करौं प्रणाम ॥

का दीबेके योग्य मैं, राम करै मन काम ॥ २३ ॥

बांछि बांछि जो ग्रंथ सुनावै । ताहि प्रणाम मोरि मन भावै ॥
सो मम सुत बंधहु ते प्यारो । सोइ भ्राता गुरु सखा हमारो ॥
तेहिं सम कौन मोर उपकारी । कहै ग्रंथ मम दोष विसारी ॥
जग महँ कौन दोष अस होई । मम करणीते भिन्नहि जोई ॥
पै अस मानस करौं विचारा । सज्जन करत अधम उद्दारा ॥
और चरित संतनके जेते । प्रतिज्ञातहैं मोरहु तेते ॥
तिनको उत्तर संत चरितमें । विरचत हौं विस्तार भरितमें ॥
संत समागम जहँ जहँ होई । तहँ तहँ ग्रंथ कहै सबकोई ॥

मोरे मन अतिशय विश्वासा । कियो ग्रंथमहँ संत प्रकाशा ॥
ताते सादर सुनिहँ संता । जे अनन्यजनहँ भगवंता ॥
करिहँ सादर गान सुजाना । जिनकी प्रीति संत रस पाना ॥
ते संतन पद रज शिर धरिकै । विनय करौं शिर अंजलि करिकै ॥

दोहा—दयार्सिंधु जगबंधु हरि, करुणाकर यदुराज ॥

करहु आपनो जानिकै, शरणागत रघुराज ॥ २४ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते

श्रीरामरसिकावल्यां उत्तरचरित्रेषु अध्यायः ॥ ६ ॥

दोहा—सादर अवनि उदंड अति, लषण उपासक जोय ॥

दास उर्मिलाकी कथा, कहत अहौं मुदमोय ॥ १ ॥

प्रथम जन्म ब्राह्मण कुल भयऊ । ग्यारह वर्ष बीति जब गयऊ ॥
तबते उपज्यो महाविरागा । कीन्ह्यो गृह कुल संपति त्यागा ॥
लषण उर्मिला पद अनुरागा । अतिहिं अनन्य निरंतर जागा ॥
रह्यो भवन पंजाबहि देशा । विचन्यो तहँ कछु काल विशेषा ॥
तहँते चलयो अवधपुर आयो । लषण उर्मिलाके रँग छायो ॥
द्वादश वर्ष कियो तहँ वासा । लषण उर्मिला दर्शन आसा ॥
जबते अवधनगर महँ आये । श्रीकंगालदास संग पाये ॥
भो कंगालदास कर संग । तेहिं प्रभाव भो भाव अभंगा ॥
यक दिन कियो विनय तिन पाहीं । देति उर्मिला दर्शन नाहीं ॥
हे कंगालदास करु दाया । मिलै दरश अस करहु उपाया ॥
तब कंगालदास मुसक्याई । कह्यो उर्मिलादास बुझाई ॥
रचहु विनय पद त्यागहु लाजा । गावहु जहँ तहँ संत समाजा ॥

दोहा—जनकलली करुणावती, दर्शन देहै तोहि ॥

मूसानगर विशेषि कै, पुनि तुम मिलिहौ मोहि ॥ १ ॥

अस कहिकै कंगाल प्रिय, चलयो अवधपुर त्यागि ॥
 आगे ताको चरित मैं, रचिहौं अति अनुरागि ॥ २ ॥
 लहि शासन कंगालको, दास उर्मिला हर्षि ॥
 यह पद रचिगावनलग्यो, अवध गलिन उत्कर्षि ॥ ३ ॥
 पद—उर्मिलादर्शन माई दे ॥ लषण सहित सियश्यामलि मूरति
 गोर विशाल माधुरी मूरति जानकी पूजन दे ॥
 लक्ष्मण नारि स्वभाव कृपालै निज पद सेवन दे ॥
 परमउदार हृदयते स्वामिनि भक्ति सनातन दे ॥
 दास उर्मिलाकी विनय सुनीजै शरण सुहावन दे ॥ १ ॥
 दोहा—यह पद गावै लाज तजि, वागै गलिन विहाल ॥

लगी आश उर मिलहिं कब, दंपति लक्षणलाल ॥ ४ ॥
 एक दिन रामघाट महँ आये । सोइ पद गावत सरयु नहाये ॥
 कनक भवन कहँ चले नहाई । बीच मिली तिय सहित कसाई ॥
 राम राम कहि लखि मुख फेरा ॥ भयो अशुभ मोहिं आजु सवेरा ॥
 लियो कसाई तेहिं पछिआई । पाछू पति आगू तिय आई ॥
 दूरि दूरि रहु अस मुख भाषै । मोहिं मति छुवै ताहि अति माषै ॥
 तब तिय कह्यो कौन तैं अहई । का गावै का मनमहँ चहई ॥
 जो तोहिं कह्यो दास कंगाला । ताको फल पायो यहिं काला ॥
 तब प्रभुके उपज्यो उर ज्ञाना । लषण उर्मिला दोहुँन जाना ॥
 परचो चरणमहँ रोय पुकारी । हाथ नाथ सुधि कियो हमारी ॥
 पुनि सँभारि बोल्यो करजोरी । सुनहु नाथ विनती असि मोरी ॥
 रही भावना अस मम नाहीं । युगलरूप जस लख्यो इहांहीं ॥
 पुरवहु नाथ मोरि अस आशा । राज माधुरी वेष प्रकाशा ॥

दोहा—लषण सहित सिय उर्मिला, भरत शत्रुहन वीर ॥
 राजसिंहासन बैठिकै, दरश देहिं रघुवीर ॥ ५ ॥

तब मुसक्याय कह्यो यह नारी । यह दुर्लभ तैं वात उचारी ॥
 पैतैं मोर अनन्य उपासी । ताते ह्वै पूरण आसी ॥
 चित्रकूट कहँ चलहु सिधारी । तहँ पूजी अभिलाष तिहारी ॥
 अस कहि भे दोउ अन्तर्ध्याना । दास उर्मिला अति सुख माना ॥
 चलयो चित्रकूटहि द्रुत आयो । मंदाकिनि महँ हर्षि नहायो ॥
 कामद कियो प्रदक्षिण जाई । फटिकशिला अधरातहि आई ॥
 तहँ सुभिरचो हे राजकुमारा । करहु सत्य जो वचन उचारा ॥
 तोहि क्षण मंदाकिनिके तीरा । प्रगटे लषण सहित रघुवीरा ॥
 सिय उर्मिला सखीन समाजा । राजमाधुरी वेष विराजा ॥
 कोटि भानु सम भयो प्रकाशा । विजुरी सम चमक्यो दश आशा ॥
 दास उर्मिला पूरण कामा । भयो तेही क्षण लखि छविधामा ॥
 क्षणमें भे प्रभु अंतर्ध्याना । दास उर्मिला भान भुलाना ॥

दोहा—चारि दंड भरि बेखबरि, परो रहो तेहि ठाम ॥

तब अकाश वाणी भई, जिमि चातक घनश्याम ॥६॥
 ध्यानमाहँ नित दरशन होई । मृषा वचन मम होय नकोई ॥
 सो सुनि उठ्यो पाय आधार । कीन्ह्यो चित्रकूट संचारा ॥
 तहँ यक मंदिर विमल बनायो । सीता राम रूप पधरायो ॥
 कालक्षेप तहँ कछु दिन करिकै । मूसानगर गयो सुख भरिकै ॥
 तहँ कंगालदास मिलिगयऊ । तब सो वचन विहँसि कहिदयऊ ॥
 मरचो साहुको सुत यक राती । डारि दियो महि रोय सजाती ॥
 तासु काय में करहुँ प्रवेशा । तोर महत्व होय यहि देशा ॥
 अस कहि किय प्रवेश तेहिं काया । भयो भोर प्रगटे दिनराया ॥
 तब सो बालक उठि सहलासा । बैठ्यो दास उर्मिला पासा ॥
 देखि लोग सब किये उचारा । दिय जियाय यक साधु कुमारा ॥
 साहु कुटुंब सहित तहँ आयो । बहु संपति चढ़ाय शिरनायो ॥

लै कुमार गमन्यो निज गेहा । प्रभु तहँ रहे किहे अति नेहा ॥

दोहा—दास उर्मिला सों कह्यो, सो कुमार निशि आय ॥

तीनि वर्षमें आइयो, अबै रहो कहूँ जाय ॥ ७ ॥

तब गुरु बदरी विपिन सिधायो। पुनि जगदीश पुरी कहँ आयो॥

वृंदावन मथुरा सुख भरि कै । मूसानगर गयो सुधि करि कै ॥

तब लों तासु पिता अरु माता । गे सुरधाम रहे तेहि नाता ॥

सो कुमार एकांतहि टारी । दास उर्मिला गिरा उचारी ॥

है कछु सुधि जो कियो चरित्रा। अब का सीख देहु मोहि मित्रा॥

तब कुमार बोल्यो अस वाचा । मैं कंगालदासहौं सांचा ॥

चलहु भजन कीजै कहूँ भाई । तहां कहव कछु तोहि बुझाई ॥

अस कहि दोउ गिरिनार सिधारे। तहां भजन किय वर्ष अठारे॥

तहँ जानकी दरश फिरि पाये । तब कंगालदास अस गाये ॥

मैंतौ सखी विदेहललीकी । सखा लषणको तैं मति नीकी ॥

देवर कहौं आजुते तोको । तैंजस चाह कहै तस मोको ॥

तब उर्मिलादास कह वाचा । मोर बड़ा भाई तैं सांचा ॥

दोहा—तब बोल्यो कंगाल प्रिय, जीवन करौ उधार ॥

विना भावना भेट नहि, होय हमार तुम्हार ॥ ८ ॥

चलहु बघेलखण्ड यक देशा। तहँहि बसव हम विरचि निवेशा ॥

कहि कंगालदास असि वानी । आय बस्यो यहि देश विज्ञानी ॥

पुनि उर्मिलादास सुख पाई । तारन लग्यो जीव समुदाई ॥

करत षडक्षरको उपदेशा । आये एक समय यहि देशा ॥

कछियाटोला रह यक ग्रामा । तहँ निपुनाथ सिंह अस नामा ॥

ठाकुर रह्यो ताहि अतिघोरा। लग्यो खबीस महा वरजोरा ॥

तीनिपुत्र डारयो द्रुत मारी । बचे पुत्र द्वै रहे दुखारी ॥

सो निपुनाथ सिंह प्रभु नेरे । गिरयो जाय ढिग चरणन केरे ॥

जानि दशा गुरु गिराउचारी । करी खवीस दुर्दशा भारी ॥
अब नहिं ऐहै निकट खवीसा । रक्षक तोर कौशलाधोशा ॥
द्वै ते पांच पुत्र तुव हैहैं । मान और दल जीत कहै हैं ॥
लहि शासन निपुनाथ बवेला । वस्यो भवन महुँ वीर नवेला ॥

दोहा—तेहिं खवीस आकर्षिकै, प्रभु दिय मंत्र सुनाय ॥

भयो मुक्त सो वेगहीं, छुटी प्रेतकी काय ॥९॥

विचरन लागे पुनि बहु देशा । जीवन करत ज्ञान उपदेशा ॥
पुनि निपुनाथ पंचभे नाती । प्रभु शरणागत भे सब भाँती ॥
प्रभु कहूँ चित्रकूट पगु धारै । कवहुँक करै अवध संचारै ॥
चरित अनंत कहे किमि जाहीं । दीख सुने वरणों तिनकाहीं ॥
सो निपुनाथ सिंह को नाती । धीर सिंह यक रह मम जाती ॥
सो मम हेतु कियो कछु विनती । प्रभु कह तासु दासमहँ गिनती ॥
अबै जो मम शरणागत होई । करै उपद्रव तहँ सब कोई ॥
वैष्णव संस्कार कछु करिहों । ताके हेतु यतन निरधरिहों ॥
अष्टादशहिं वर्ष जब वीती । होई तासु साधु महँ प्रीती ॥
तब यक पुरुष प्रचंड प्रभाऊ । ऐहै रीवां मृदुल सुभाऊ ॥
ताको नाम मुकुंदाचारी । सो सिंगरो वघेल कुलतारी ॥
पुनि प्रभु मम सुमिरत धनुधारी । कछिया टोला वसे सुखारी ॥

दोहा—आकस्मातहिं एक दिन, सिंह पहार बोलाय ॥

कह्यो आवती गाँव तुव, हुलकी जोर जनाय ॥ १०॥

कह्यो पहारसिंह तब वानी । नाथ करहु वाधाकी हानी ॥
प्रभु कह एक नारि मरिजैहै । पुनि नहिं मारी काहु सतैहै ॥
दिवश तीसरे मरिगै नारी । और सब तहँ रहे सुखारी ॥
तासु निकट माधवगढ़ ग्रामा । मरनलगे तहँ जन दुखछामा ॥
आय गिरे पग तहँके वासी । त्राहि त्राहि रक्षहु दुखनासी ॥

प्रभु कह गयो जबै वंगाला । मंत्र सिख्यो चेटकी विशाला ॥
 तौन मंत्र मैं देत बताई । मारी मिटिहै करहु उपाई ॥
 रामानुज लघु रेंख खचाई । सो नहिं नाँव्यो असि मनुसाई ॥
 गेरू दूध डारि घट माहीं । आगे करिकै सुरभी काहीं ॥
 डरिहौ जहँ जहँ ताकारि धारा । हुलकी तहँ नहिं करी प्रचारा ॥
 तैसहिं किये अर्द्ध पुर वासी । भये न कोउ हुलकीते त्रासी ॥
 अर्द्ध गाँवके पुनि प्रभु पाहीं । गिरे आय व्याकुल पद माहीं ॥

दोहा—प्रभु कह मैं वैदीनहीं, जानहुँ नाशक शोक ॥

हुलकी रोगहि नाशि है, यह तरु राज अशोक ॥११॥

यहि अशोक के पत्र खवाई । मारीकी भय देहु मिटाई ॥
 सुनि जन लै अशोक दल काहीं । डारनलगे रुजिन मुख माहीं ॥
 जे रोगी अशोक दल खाये । ते तुरतहि अरोग ह्वै आये ॥
 तहँ यक ब्रह्म लग्यो द्विज काहीं । लै आयो प्रभुके शरणाहीं ॥
 ताहि षडक्षर मंत्र सुनायो । तरचो ब्रह्मनभ शोरहि छायो ॥
 तासु देखि हरिपर अनुरागा । दियो मंत्र कीन्ह्यो बड़भागा ॥
 रामगुलेला नाम धरायो । कछु दिन प्रभु निज निकट टिकायो ॥
 तासु पिता तेहिं घरलै गयऊ।कियो विवाह सुखित अति भयऊ ॥
 प्रभु इत चित्रकूट पग धाँव्यो।गमन लेन द्विज सुतहिं विचाँव्यो ॥
 जा दिन तासु नारि घर आई । मारी वश सुत मरचो तहाई ॥

दोहा—जेहिं दिन सो द्विज सुत मरचो, रामगुलेला नाम ॥

दास उर्मिला ताहि दिन, आय गये तेहि ग्राम ॥१२॥

तासु धाम यक साधु पठायो । निज आगमकी खबरि जनायो ॥
 साधु गयो देख्यो तहँ भोरा । मच्यो तासु घर आरत शोरा ॥
 तेहिं कुलके मर्घट लै गमने । लौट्यो साधु गयो नहिं भवने ॥
 सब वृत्तांत कस्यो प्रभु पाहीं । प्रभु कह सत्य लगत मोहिं नाहीं ॥

चलहु तहां जहँ लावहिं ताको । जीवत दाहत शोक न काको ॥
 असकहि गे प्रभु मर्घट माहीं । धरचो चिता पर सब तेहिं काहीं ॥
 प्रभु कह जीवत कीजत दाहा । देहैं दंड तुम्हैं नरनाहा ॥
 प्रभुको देखि महादुख छायो । राम गुलेलाको पितु धायो ॥
 प्रभु पद परचो पुकारि पुकारी । प्रभु कह तोरि गई मति मारी ॥
 लेहु चिता ते सुतहि उतारी । चलहु भवन मूच्छा भै भारी ॥
 तेहिं पितु गुणि गुरु वचन विश्वासा लै आयो सुत मृतक अवासा
 धरवायो इक कोठरी माहीं । जुरे बहुत जन लखन तहांहीं ॥

दोहा—तेहि सुतके पितुको दियो, प्रभु शासन यहि भांति ॥

व्यंजन विरचहु विविध विधि, जेवहिं संत जमाति ॥ १३ ॥

विप्र तुरत प्रभु वचन सुनि, व्यंजन रच्यो अनंत ॥

खबरि दियो प्रभुके निकट, चलि जेवहिं सब संत १४

रूसि कहे सब संत तब, परी लहाश दुवार ॥

नाथ कौन विधि जायकै, हम सब करव अहार ॥ १५ ॥

तब प्रभु कह सबसों विहँसि, चलहु अनत इत खाय ॥

यंत्र मंत्र जानौं नहीं, ताको कवन उपाय ॥ १६ ॥

यत्न एक आवत हमैं, कहहु जो यह सप्ताह ॥

लषणलाल करिहैं कृपा, का संशय यहि माह ॥ १७ ॥

संत सबै बोले विलखि, क्यों बीतें दिन सात ॥

घरी माहँ घरही जरे, कह भद्राकर घात ॥ १८ ॥

प्रभु कह सो सप्ताह नहिं, मम विरचित पद सात ॥

गावहु बाज मिलायकै, मुदित सात क्षण जात ॥ १९ ॥

सबै संत गावन लगे, यही मधुर पद सात ॥

सो आगे लिखि देतहों, अति विचित्र अवदात ॥ २० ॥

गायचुके जब सात पद, सात क्षणै सब संत ॥

गोहरायो प्रभु आपहीं, वार वार विहसंत ॥ २१ ॥

रामगुलेला क्यों नहि आवै । कत भोजन विलंब दरशावै ॥
 इतनी सुनत नाथकी वानी । कढ़ि आयो द्विजसुत सुखदानी ॥
 प्रभु पद परि बोल्यो असि वाता । नीद लागिगै मोहि अघाता ॥
 प्रभुतेहि कर गहि भोजन हेतू । गये संत युत विप्र निकेतू ॥
 जय जय कार मच्यो चहुँ ओरा । गिरे नाथ पद मनुज करोरा ॥
 प्रभु भोजन करि संत जेबाई । गमने और गावै अतुराई ॥
 अबलों जीवत रामगुलेला । वसत पुत्र अरु पौत्र नभेला ॥
 मैं अस सुनि प्रभाव प्रभुकेरो । चाह्यो नाथ कमलपद हेरो ॥
 पढ़ै विनय पत्रिका बनाई । चह्यो भवन निज नाथ अवाई ॥
 तब पठ्यो उत्तर प्रभु मोको । नहि संसार भीति कछु तोको ॥
 और रूपते दरशन देहों । अबै न अपने निकट बोलैहों ॥
 भूप गोरैयाको सुत जोई । तुव पितृव्यको पुत्रहु सोई ॥

दोहा—खंड तपस्या दोउ किये, रहिहैं ये दोउ नाहि ॥

दोहूके सुत होहि दोउ, तब सुधरी दोउ काहिं ॥ २२ ॥
 प्रभुके वचन भये परमाना । दोउ किये दिवि लोक पयाना ॥
 यक यक सुत भे दोहुँन केरे । अबहैं बंधु प्रगट जग मेरे ॥
 कहँलों कहों नाथ प्रभुताई । रसना एक सकै नहि गाई ॥
 यहि विधि करत अनेक चरित्रा । करत अपावन अमित पवित्रा ॥
 वीति गयो विहरत बहुकाला । तब प्रभु कह सुनु दशरथ लाला ॥
 अब कलिकाल जगत् महँ छायो । नाथ तिहारो विरह सतायो ॥
 अब नहि रहिहों यहि संसारा । लखों निरंतर चरण तिहारा ॥
 एवमस्तु लक्ष्मण मुख भाषे । तब प्रभु देह तजन अभिलाषे ॥
 महाकालको रूप बनाई । पूजि सविधि नैवेद्य लगाई ॥

कह्यां डरहु नहि मोकहँ काला। अब निदेश दिय दशरथ लाला
अस कहि अर्द्ध राति पर्यँका। बैठे पद्मासनहिं निशंका ॥
सब संतनको निकट बोलाई। यहि दोहाको दियो सुनाई ॥

दोहा—जा मरिबेको सब डरै, हमरे परमअनंद ॥

कब मरवी कब भेटवी, पूरण करुणाकंद ॥ २३ ॥

अस कहिकै पुनि मौन है, लीन्ह्यो श्वास चढ़ाय ॥

ताजि शरीर पहुँचे जहां, रघुपति चारौभाय ॥ २४ ॥

अमित चरित महाराजके, कहँलों करों बखान ॥

विस्तर भय संक्षेपहीं, कीन्ह्यो सकल विधान ॥ २५ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीराम-

रसिकावल्यांकलियुगखंडे उत्तरचरित्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दोहा—अब चरित्र वरणों विमल, कियो दास कंगाल ॥

सुनत जाहि श्रोता सकल, नित नित होत निहाल ॥ १ ॥

जबते त्यागि दियो गिरिनाला। बसे बघेल खंड जेहिं काला ॥

तबते एक ग्राम गढ़वारा। तहँ रहे नहिं किय संचारा ॥

कुटी तहां यक विमल बनाई। बसे परमहंसी दरशाई ॥

दास उर्मिलै देवर कहहीं। कबहुँ न तासु दरश मन चहहीं ॥

दास उर्मिला तेहि प्रति वर्षा। पठवाहिं नारि वसन युत हर्षा ॥

एक समय कछु भइतनु व्याधी। दास उर्मिलौ जानि समाधी ॥

पठयो डोरिया तुरकी आपा। दास उर्मिला लै शिर थापा ॥

कह्यो बड़ा भाई तव वीरा। जो रोकै अब काल गँभीरा ॥

सुनि कंगाल दास असि वानी। पठयो कछुक मिठाई आनी ॥

तब उर्मिलादास कह वाता। रोक्यो काल वर्ष अब साता ॥

चारि दंड बाकी निशि माहीं। चलि वापी महँ नितहिं नहाहीं ॥

पुनि कछु नित्यकृत्य करिलेहीं। दास कंगालकुटी चलि तेहीं ॥

दोहा—करहिं कोठरी बंदकरि, डेढ़ पहर लागे ध्यान ॥

हरिप्रसाद भोजन करहिं, पुनि बहु वचन बखान ॥२॥

कोठी एक ग्राम जन कहहीं । तहँ वघेल दुनिया पति रहहीं ॥
तिनके ढिग चेटकी सिधारा । पत्थर गिरि अस नाम उचारा ॥
जौन कहै सो सत्य देखावै । व्याघ्र वृषभ निज रूप बनावै ॥
दे कपाट कोठरी घुसि जावै । और ठौरते तुरतहि आवै ॥
महाचेटकी चरित अपारा । वरणि सकै को विविध प्रकारा ॥
सुन्यो चरित्र दास कंगाला । दीनादासहिं कह तत्काला ॥
पत्थर गिरिके निकट सिधाई । यह पषाण तुम दियो देखाई ॥
महाचेटकी यहू बखाना । यह लखि होई अवशि अयाना ॥
अस कहि पाथर दियो उठाई । दीनादास चल्यो शिरनाई ॥
गयो जबै पत्थरगिरि नेरे । जान न पाये मनुज घनेरे ॥
तब चाढ़ि यक ऊंचे थल माहीं । दरशायो पाषाणहिं काहीं ॥
पुनि पत्थर गिरिकोगोहरायो । मोहिं कंगाल दास पठवायो ॥

दोहा—पत्थरगिरि पत्थर लखत, पत्थर भयो तुरंत ॥

दीनादास यकांत लहि, भन्यो वचन भयवंत ॥ ३ ॥

मैंकरि चेटक पेट चलाऊं । प्रभुको कछु न प्रभाव जनाऊं ॥
किह्यो मोर बदि प्रभुहिं प्रणामा । विनती किह्यो दासकी आमा ॥
यह पषाण लखि चेटकताई । मोर गई अब सबै विलाई ॥
पुनि पत्थर गिरि दीनादासै । दिय मुद्रा शत सहित हुलासै ॥
दीनादास आय प्रभु पाहीं । कहन न पायो कछु मुख माहीं ॥
वर्णि गये प्रभु सबै हवाला । जस कीन्ह्यो चेटकी कराला ॥
गावैं सोहावल बसे वघेला । पृथ्वीपति अस नाम नवेला ॥
ताहि प्रत्यक्ष रही निज देवी । रह्यो अनन्य कालिका सेवी ॥
पीवत सुरा दूध है जाई । ब्रह्मचर्य महँ रहै सदाई ॥

बांधै आयुध गुरिद सदाई । महि पर पटकत अरि मरि जाई ॥
 सो कोठी पर कियो चढ़ाई । दशहजार सेना सँग धाई ॥
 तव कोठीको ठाकुर भाग्यो । दासकंगाल चरण अनुराग्यो ॥
 दोहा—कियो विनय परि चरणमें, अति दीनता दिखाय ॥

पृथ्वीपति मारत हमैं, करिये कौन उपाय ॥ ४ ॥

प्रभु कह कहिहों ताहि बुझाई । जो नमानिहै तौ फल पाई ॥
 कहि कंगाल दास असि वानी । पृथ्वीपति ढिग गयो विज्ञानी ॥
 करत रहै देवी कर पूजा । तासु समीप रहै नहिं दूजा ॥
 कह्यो नाथ दुनियापति काहीं । पृथ्वीपति मौरि अब नाहीं ॥
 सेवक तोरकरी सेवकाई । यहि वारहिं अब देहु वचाई ॥
 सुनत वचन पृथ्वीपति कोपा । प्रभुके सन्मुख अस प्रणरोपा ॥
 दुनियापति पग बेरी डारी । लेब छड़ाय राज्य हम सारी ॥
 सन्मुखते टरिजा बैरागी । नातो पीठि कशा अब लागी ॥
 सुनि प्रभु कह्यो कुपित असि वानी । देवीबल मति तोरि भुलानी ॥
 देवी राखिसकी तोहिं नाहीं । लगी खड्ग तेरे शिरमाहीं ॥
 फौज फूंक सी यह उड़िजैहै । राज्य अवशि दुनियापति पैहै ॥
 अस कहि नाथ लौटि पुनि आये । दुनियापति को वचन सुनाये ॥

दोहा—पृथ्वीपति विन शीशको, आवतहै तुव पास ॥

हठै सहित मारो शठै, पठै फौज अनयास ॥ ५ ॥

तव गजराजसिंहके साथ । पठयो द्रुशत कोठीनाथा ॥
 पैदर द्रुशत लै गजराजा । सन्मुख भयो युद्धके काजा ॥
 नदी एक सेमरावलि जोई । रातिहि लागि गये सब कोई ॥
 भोर खबरि पृथ्वीपति पायो । दशहजार दल लै सँग धायो ॥
 हने बँदूख युगल शत बीरा । बड़े बड़े गिरिगे रणधीरा ॥
 भागी सेना दशौहजारा । पृथ्वीपति किय कोप अपारा ॥

लैकर गुरिदा कोपित धायो । गजराजहिंके सन्मुख आयो ॥
 हन्यो भूमि गुरिदा त्रयवारा । पावक ज्वाल कढ़ी विकराला ॥
 सो गजराज समीप न आई । भभकि भभकि तहँ गई बुताई ॥
 तब गजराज खड्ग चलि मारच्यो । पृथ्वीपति शिर कंध उतारच्यो ॥
 सो कंगालदास परतपा । कियो न कछुक यज्ञ तप जापा ॥
 दुनियापति कोठीकी राजू । पायो भयो सकल कृत काजू ॥

दोहा—दिखितगोरैयाको रह्यो, भूप नाम पृथ्विपाल ॥

तापर श्रीकंगालप्रिय, अतिशयरहे दयाल ॥ ६ ॥

यक दिन सो रीवांते गमनो । जानचह्यो निशिमें निजभवनो ॥
 वर्षन लगो महा घनघोरा । दामिनि दमकि रही चहुँओरा ॥
 सलिल प्रवाह सूझ नहिं पंथा । कौन कहै चलिबेकी संथा ॥
 अश्व चढ़ो राजा पृथ्विपाला । गयो नाथढिग अतिहिं विहाला ॥
 कह कंगालदास तेहिकाहीं । आजु गोरैये जैयो नहिं ॥
 कह पृथ्विपाल करहु असिदाया । जाहु भवन रोगित मम जाया ॥
 प्रभु कह चाहसि लखन तमासा । सो देखै बैठे मम पासा ॥
 अस कहि निकसि कुटी ते आये । फजिल फजिल अस शोरसुनाये
 फजिल कहत फूटे घन कारे । निकसे विमलचंद्र अरु तारे ॥
 मम मातामह नृप पृथ्विपाला । हय चढ़ि पहुँच्यो घर तत्काला ॥
 पहुँचिगयो जब घरमहँ जाई । होनलगी पुनि वृष्टि महाई ॥
 पूछे पुरवासी चलि भोरा । किमि उतरच्यो बाढ़ी सरि घोरा ॥

दोहा—तीनि दिवशते नाव नहिं, लागी टमस मझार ॥

तीनि दिवशते जल बह्यो, ऊपर रह्यो करार ॥ ७ ॥

तब पृथ्विपाल कह्यो अस वानी । आवत मोहिं परच्यो नहिं जानी
 अर्थ जानुलो सरि जल भयऊ । विषम पंथ कछु ह्वै नहिं गयऊ

यह कंगालदास परभाऊ । काहेको शंका उर लाऊ ॥
 एक दिन विप्र गयो उरसांचो । सुता विवाह हेतु धन यांचो ॥
 प्रभु कह मेरे संपति नाहीं । देहैं बदरीतरुतोहिं काहीं ॥
 बदरीतरुतरसो द्विज जाई । यांच्यो नाथ सुनाय रजाई ॥
 सहसतीनि मुद्रा तरु तरमें । लागि गये अवनीसुर करमें ॥
 लै संपति द्विज सुता विवाहा । और कियो सब घर निर्वाहा ॥
 एकदिन कह पृथ्विपालहि वानी । मनुज वृथा अतिशय अभिमानी
 जानत मीच नगीचहिं नाहीं । श्वान सरिस वागत चहुँवाहीं ॥
 देखहु यह जो आवत श्वाना । तासु आयुषा दण्ड प्रमाना ॥
 यह सुनि सबको अचरज लाग्यो । नृप पृथ्विपाल वचन अनुराग्यो

दोहा—देखन लाग्यो श्वानको, मरण कौन विधि होय ॥

दण्ड विते मरिगो तहां, यह देख्यो सब कोय ॥ ८ ॥

एक समय पृथ्विपालहि काहीं । कहीं भवानी सब तनुमाहीं ॥
 लग्यो मरण जीवन गै आशा । लैगे सब तुरंत प्रभु पासा ॥
 देखि दयालु दंड लै दौरे । मारचो शिबिका महँ अति जोरे ॥
 दंड लगत मिटिगई भवानी । उठि पृथ्विपाल गह्यो पदपानी ॥
 मातामह द्रुत भयो निरोगा । प्रभु दीन्ह्यो तेहिं बहुरि नियोगा ॥
 विद्यमानहै जो सुत तेरा । ताके उपर काल कर फेरा ॥
 मेघवा बाबा शिष्य हमारा । तौन चलाई वंश तुम्हारा ॥
 तौन काल अचरज सब माना । अब प्रभु वचन सत्य प्रगटाना ॥
 जेठ सुवन नृपको मरिगयऊ । मेघवा बाबा तनु तजिदयऊ ॥
 द्वितीय पुत्र पायो पृथ्विपाला । विद्यमान सो है यहि काला ॥
 अहैं अनंत चरित्र नाथके । किमि वरणों सब मोद गाथके ॥
 एक दिन लीन्ह्यो जननि बोलाई । सबसों कह्यो भजहु हरि भाई

दोहा—पद्मासन करि श्वासको, लीन्ह्यो सहज चढ़ाय ॥
 पंचभूत तनु त्यागिकै, गे जहँ रघुकुल राय ॥ ९ ॥
 इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्री
 रामरसिकावल्यांउत्तरचरित्रेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दोहा—अब वरणों सुंदर चरित, कियो जो दास मलूक ॥
 अबलों पुरी प्रभावहै, खात जासु सब दूक ॥ १ ॥
 दास मलूक सो ज्ञाननिधाना । कबहुँ सुन्यो आपने काना ॥
 बादशाह गहि साधुन काहीं । बेरी डारतहै पग माहीं ॥
 यह सुनि दिछीको चलि आये । बादशाह भट चलि गहि लाये ॥
 आयसवेरी पगमहँ डारयो । दास मलूक चरण झिटिकारयो ॥
 पग झिझकारत आयसवेरी । टुटिगई लागी नहिं देरी ॥
 परी रहीं साधुन पग जेती । टूटतभई तुरंतहि तेती ॥
 यह अचरज लखि परिकर धाये । बादशाहको खबरि जनाये ॥
 बादशाह आयो द्रुत धाई । दास मलूक चरण शिरनाई ॥
 गुगल जोरि कर वचन उचारा । जानन हेतु प्रभाव अपारा ॥
 मैं साधुन बेरी पगडारा । लख्यो प्रत्यक्ष प्रभाव तुम्हारा ॥
 देहु नाथ अब मोहिं प्रसादा । दास मलूक कियो अस वादा ॥
 भोजन करि मांगतो प्रसादा । शाह कह्यो यह मृषा विवादा ॥
 दोहा—दास मलूक कह्यो तबै, वीहीके फल खाय ॥

मृषा कहै मोसों वचन, शाह सुचेत गवाय ॥ १ ॥
 वीही फल जेते तुव बागा । तिन सब फलन मोर मुँहलागा ॥
 खायो मोर जूठ तैं शाहा । सुनि अस शाह गुण्यो मनमाहा ॥
 मृषा कहत यह दास मलूका । लख्यो मांगि फलते सब दूका ॥
 दास मलूक सिधारा । आयो जहँ जगदीश अगारा ॥

बैठजाय मंदिर पिछवाई । द्विज वपु धरिगे हरि तहँ धाई ॥
 कह्यो चलहु दरशन अब लेहू । दास मलूक कह्यो करि नेहू ॥
 जगन्नाथ वकसत जस टूका । तस नहिँ लेई दास मलूका ॥
 जो मलूक टूका सब खावै । तौ मलूक दर्शन हित जावै ॥
 प्रभु कह जैसो महाप्रसादा । तस मलूक टूका मर्यादा ॥
 अस कहि अपनो रूप देखायो । तब मलूक चरणन शिरनायो ॥
 पुनि मलूक दर्शन चलि लीन्ह्यो । निज टूका दीवो थिर कीन्ह्यो ॥
 तबते पुरी माहँ मर्यादा । अबलों वनी अहै अविवादा ॥

दोहा—पुरी जाय जो जन कोऊ, पावै महाप्रसाद ॥

टुकडा दास मलूकको, लेइ विहाय प्रसाद ॥ २ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरा
 मरसिकावल्यां उत्तरचरित्रेन वमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दोहा—चित्रकूटमें बसतथे, श्यामदास यक संत ॥

तासु चरित वर्णन करों, महिमा जासु अनंत ॥ १ ॥

योग निधान ज्ञानके सागर । प्रेमभक्ति महँ महाउजागर ॥
 सीतापतिके दर्शन पाये । मो पितुको उपदेश सुनाये ॥
 यक दिन मम पितु काहिँ बोलाई । सीताराम मूर्ति मन भाई ॥
 देत भये कहिकै असि वाणी । पूजौ तुम हैहौ निर्वाणी ॥
 जबलों तुव घर मूरति रहिहै । तबलों कछु अनर्थ नहिँ हैहै ॥
 अस कहि बैठ भुँइहरा माहीं । कियो समाधि तीनि दिन काहीं ॥
 तीजे दिन तनु सकल सुखाना । आप गये समीप भगवाना ॥
 सो मूरति पूज्यो पितु मोरा । पुनि दीन्ह्यो मोहिँ सहित निहोरा ॥
 मम पितु पूजित मूरति सोई । दीन्ही श्यामदासकी जोई ॥
 न मूर्ति विलग दोउ होती । दिन दिन करती कलाउदोती ॥

जो कछु अनरथ होय होवैया । सुमिरत सो मिटि जात सदैया॥
श्यामदास की कथा अनेका।इत लिखि दिय विस्तर भय एका॥

दोहा—चित्रकूटमें आजुलों, तिनको प्रगट प्रभाव ॥

जानत सिगरे संतजन, कोहुको नहीं दुराव ॥ २ ॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसि
कावल्यां उत्तरचरित्रे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दोहा—चरणदास यक नाम जिन, रहे संत पंजाव ॥

तिनको हरिको दरश भो, श्रोता सुनहु स्वभाव ॥१॥

छंद—यक चरणदास महातमा हरिमें करी परतीति ॥

हरि दियो शासन प्रगटिकै कीजै सुरोदय रीति ॥

राची सुरोदय रीतिसो जाने सकल विधि जौन ॥

आगम निगम जानत सकल छिपि जाय जन अस कौन॥

दोहा—तौन सुरोदय रीति अब, जगमें अहै विख्यात ॥

पढ़त सुनत समुझत गुणत, प्रगट होत सब बात॥२॥

इति सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसि

कावल्यां उत्तरचरित्रे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दोहा—भये एक पंजावमें, साधू मंगलदास ॥

तिनको जो कछु मैं सुन्यो, सो वरणौं इतिहास ॥१॥

महा प्रभाव सुमंगल दासा । रामतीर्थ महुँ करै निवासा ॥

रघुपति मंत्र पचाश हज़ारा । जपै षडक्षर राम अधारा ॥

संत सहस नित संगहि रहहीं । राम कृपावश भोजन लहहीं ॥

नहिं बंधेज न कछु बंधाना । मिलहि वस्तु अनयासहि नाना ॥

एक समय दिन सात व्यतीते । सबै संत भोजनते रीते ॥

सतयें दिन जो रह्यो पुजारी । आई ताको महातमारी ॥

गिरयो भूमि लै ठाकुर काहीं । आप कह्यो चेतैं कस नाहीं ॥
कह्यो पुजारी तब अनखायो । सात दिवश भोजन नहिं पायो ॥
कैसे सावित रहै शरीरै । तुम नहिं कहौ कछू रघुवीरै ॥
मंगलदास कह्यो तब वानी । लेत परीक्षा प्रभु में जानी ॥
शालग्राम शिलाहैं जेते । फेंकहु जलमहँ राखु न तेते ॥
सहस शिला लै गयो पुजारी । फेंकि दियो गम्भीरहि वारी ॥

दोहा—सांझ समय कहँते तुरत, दश वृष लदो पिसान ॥

आय गयो साधू सबै, जय जय किये महान ॥ २ ॥
संतनकी जब भई रसोई । मंगलदासै कह तब कोई ॥
ठाकुर सिंगरे नीर डुबायो । चहौ कौन विधि भोग लगायो ॥
मंगलदास कह्यो नहिं जैहैं । दशरथलाल क्षुधावश ऐहैं ॥
जाहु मूर्ति को लै सब आवहु । फेंकेहु पुनि जो एक न पावहु ॥
गयो पुजारी सरिके तीरा । रह्यो सलिल अतिशय गम्भीरा ॥
सिंगरी मूर्ति लख्यो सरि तीरा । लै आयो मिटिगै सब पीरा ॥
नौसे निन्यानवे गनायो । एक मूर्ति को खोज न पायो ॥
मंगल दास कह्यो मन बिगरे । लै आवहु की फेंकहु सिंगरे ॥
गयो पुजारी पुनि सरि तीरा । निरख्यो तहाँ मूर्ति रघुवीरा ॥
लै आयो तब भोग लगायो । सिंगरे साधुन सुखद जेवायो ॥
करत रहे यक दिन जपस्वामी । बैठे संत मुक्तपद गामी ॥
राम कहत ऐंच्यो सो श्वासा । उठ्यो धूम तनुते चहुँ पासा ॥

दोहा—धूम मात्र देखो परचो, लख्यो न परो शरीर ।

सकल संत विस्मित भये, कियो काह मतिधीर ॥ ३ ॥

दंड द्वैकमें पुनि सबै, देख्यो मंगलदास ॥

पूछनलागे संत सब, गये कौनके पास ॥ ४ ॥

मंगलदास कह्यो विहँसि, गये जहाँ रघुवीर ॥

कछु चाकरी बजाय कै, पुनि आये सरि तीर ॥ ५ ॥

औरहु कथा अनेक हैं, कहँलों करों उचार ॥

वरण्यो इत संक्षेपते, कियो न बहु विस्तार ॥ ६ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजा श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसिकाव

ल्यां उत्तरचारित्रे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दोहा—रामदास एक साधुवर, रहे वदनपुर माहिं ॥

सेवन संतन धर्म लिय, सम देख्यो सबकाहिं ॥ १ ॥

जो कोउ संत दुवारे आवै । सोविन भोजन जान नपावै ॥

गंगा तटमें कुटी बनाई । वसै करै संतन सेवकाई ॥

औरौ चरित अनेकन तिनके । वर्णन शक्ति कहोहै किनके ॥

तौन कुटी देख्यो मैं जाई । विस्मित भयो देखि प्रभुताई ॥

एक ओर आचारिन डेरा । एक ओर सब द्विजन बसेरा ॥

अंधर बधिर पंगु एक ओरा । वसाहिं संत औरहु एक ठोरा ॥

सहसन मनुज वसैं चहुँ पासा । भोजन देहिं सबन अनयसा ॥

नहिं बंधेज न कहँ वंधाना । पूरण करहिं सदा भगवाना ॥

एक दिन संत भीरभै भारी । वर्षन लागे बहु चन वारी ॥

जाय भँडारी प्रभुहि जनायो । आजु अन्न कहँते नहिं आयो ॥

रामदास बोले तब वानी । पूरण करिहैं जानकि जानी ॥

अस कहि एक कुँडरा मँगवायो । निज तुंबा तेहि औंध करायो ॥

वचन कह्यो जय जनककिशोरी । जो सति आश मोहिं एकतोरी ॥

दोहा—तौ घृत चिनी पिसान बहु, ईधन साज समेत ॥

तुंबाते निकसै सकल, बधै साधु कर नेत ॥ २ ॥

यतना भाषत तुम्बा तेरे । कढ़े सकल वस्तुन के ढेरे ॥

सहसन साधु सुभोजन कीन्हे । तुंबारीत न प्रभु करि लीन्हे ॥

सकल संत कीन्हे जयकारा । आप कह्यो जय राजकुमारा ॥
 औरौ चरित अनेकन तिनके । वर्णत शक्ति कहो है किनके ॥
 पुनि जब छोंडनलगे शरीरा । नाव चढे गंगाके तीरा ॥
 छीतूदास आदि सब भक्ता । बैठे सबै राम अनुरक्ता ॥
 तब प्रत्यक्ष यक सुंदारि नारी । आई नभते भास पसारी ॥
 सबकोउ लखत चकित भे साधू । कहि न सके कछु गिरा अगाधू ॥
 रामदास सों सुंदारि बोली । बैठे कहैं चिंता कहैं तोली ॥
 तोहिं बोलायो राजकुमारा । रहे बहुत इत चलहु अगारा ॥
 रामदास बोले मुसकाई । क्यों नहिं खवारि करै तू माई ॥
 लागिरहीथी यह मन आशा । सो तू दरश दियो अनयासा ॥
 अस कहि पुनि कहि जय रघुवीरा । रामदास जी तज्यो शरीरा ॥

दोहा—सो तिय अंतर्ध्यानभै, जान्यो चरित नकोय ॥

चमकी चपला सी गगन, मेव विना क्षण दोय ॥२६॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसि
 कावल्यां उत्तरचरित्रे त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

दोहा—महामनोहरि अब कथा, कहौं संतकी एक ॥

जो मम देशहिंमें भयो, कीन्ह्यो चरित अनेक ॥ १ ॥

बरदाडीह ग्राम यक मेरा । सोई तासु जन्मकर खेरा ॥
 नाम अनंतदास है ताको । अबलों मंडित करत क्षमाको ॥
 रहे गृहस्थ महा धनहीना । निकरि भवनते पंथहिं लीना ॥
 नीमच शहर गये यक बारा । तहँको सुनिये चरित अपारा ॥
 राख्यो तेहिं नौकर अंगरेजा । वसे करत भोजन बंधेजा ॥
 हाकिम घरते जो कछु पावैं । सो नहिं राखैं संत खवावैं ॥
 यहि विधि बीति गयो कछु काला । यक दिनको अस भयो हवाला ॥

पहरा जब अनंतको आयो । तेहिं क्षण साधू एक सिधायो ॥
 उन अँगरेज केर भय भारी । साधु जेवावन करी तयारी ॥
 जो नहिं जैहों पहरा माहीं । देहें अवशिदंड मोहिं काहीं ॥
 साधु प्रीति वश मैं नहिं गयऊ । पहराकाल व्यतीतत भयऊ ॥
 जब पहरा अनंतको आयो । हरि अनंत वपुधारि सिधायो ॥

दोहा—टोपी कुरती पहिरिकै, हाथे धरि संगीन ॥

दीनदयालु गोविंद प्रभु, पहरा दियो नवीन ॥ १ ॥
 टहलेंचहुँदिशि सोरठ गावैं । सूर पदनमें सुरन मिलावैं ॥
 महा माधुरो यह पद गावैं । सो अब हम लिखिकै दरशावैं ॥

पद—हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥

समदरशी प्रभु नाम तिहारो वैसहि पार करो ॥
 एक लोहा पूजामें रहतो एक घर वधिक परो ॥
 सो दुविधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो ॥
 एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ॥
 सो जब जाय मिलत गंगामें सुरसरि नाम परो ॥
 एक माया एक जीव कहावत सूरश्याम झगरो ॥
 की याको निरवार करो प्रभु की प्रण जात टरो ॥

जब पहरा तिनको ह्वैगयऊ । द्वितिय संतरी आवत भयऊ ॥
 तब प्रभु भे तहैं अंतर्ध्याना । दास अनंत कछु नहिं जाना ॥
 मान्यो मनमहँ भीति महाई । कालिह पाइहों अवशि सजाई ॥
 अस विचारि जो कछु धन रहेऊ । सो सब संतनके कर दयऊ ॥
 गये प्रभात डेरात डेराता । जमादारके ढिग अकुलाता ॥
 गयो भवन वैष्णो बहु दूरी । जमादार चितयो सुखपूरी ॥
 चलत अनंतहिं निकट बोलायो । बड़े हेतुसों वचन सुनायो ॥
 गावहु जो कीन्ह्यो निशि गाना।कबहुँ न सुन्यो गान अस काना॥

तब अनंत बोल्यो भय पाई । मृषा दोष कत देहु लगाई ॥ ॥
 आयो मैं नहिं पहरा हेतू । किय कसूर मैं महा अचेतू ॥
 दोहा—जमादार बोल्यो विहँसि, काहे मृषा बताहु ॥

पहरा दीन्ह्यो दंड षट, गायो सहित उछाहु ॥ २ ॥
 तब अनंत जान्यो मनमाहीं । हैं प्रभु और होय गो नार्हीं ॥
 मेरे हित पहरा प्रभु दीन्ह्यो । यह अपराध हाय मैं कीन्ह्यो ॥
 अस कहि तुरतहि डेरहिं आयो । रंकनसंपतिसकललुटायो ॥
 कस्योलगोटी लैकरि तुंवा । मानहु लियो भक्ति कर तुंवा ॥
 चलयो रँग्यो रघुनायक रंगा । आगे पाछे कोउ नहिं संग्गा ॥
 सात दिवश व्रत भे पथ माहीं । अन्न सलिलकी रुचि कछु नार्हीं ॥
 निशिमें प्रगट भये सिय रामा । कह्यो जाहु अपने अब धामा ॥
 दास अनंत भवन चलि आयो । मैंहूँ ताको दर्शन पायो ॥
 जबतब आवहिं भवन हमारे । कृपा करहिं निज दास विचारे ॥
 मम शरीरमें भो कछु रोगू । सो लखि दीन्ह्यो मोहिं नियोगू ॥
 कबहुँ न याकी ओषधि कीजै । याको गुरू मानि निज लीजै ॥
 यह विरागको बीज उदंडा । पैहौ नहिं कबहुँ यमदंडा ॥

दोहा—जगते होय विराग अति, उपजै तब विज्ञान ॥

तब उपजै सिय पिय चरण, प्रेम भक्ति परधान ॥ ३ ॥

अस निदेश प्रभु मोहिं करि, विचरतहैं सब देश ॥

रँगे हमेश रमेश रँग, हरैं अशेश कलेश ॥ ४ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामर
 सिकावल्यां उत्तरचरित्रे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

दोहा—रामदासको कहत हौं, अब सुंदर इतिहास ॥

चित्रकूटमें वास करि, रहे रामकी आस ॥ १ ॥

ताको नेम रह्यो यहिँ भाँती । बाँचै रामायण दिन राती ॥
 पहर निशा बाकी उठि बैठै । मज्जन हित मंदाकिनि पैठै ॥
 करिकै नित्यकृत्य मठ आमै । चारिदंड जब रहै तृयामै ॥
 तबते लै रामायण काहीं । पाठ करै यहि रीति सदाहीं ॥
 रहै दंड बाकी दिन चारी । तौ कछु पयके होहिँ अहारी ॥
 सांझ भये दै युगल कपाटा । ध्यान करें रोके मन वाटा ॥
 असी वर्ष यहि रीति चलायो । कबहुँ न तिनको विघ्न सतायो ॥
 एक दिवश निशि ध्यानहि माहीं । भयो विरह प्रभुको तिन काहीं ।
 भलो होय जो छुटै शरीरा । मिलिहौं जाय कबै रघुवीरा ॥
 तहँ प्रत्यक्ष भये रघुनाथा । दीन्ह्यो रामदास शिर हाथा ॥
 मुक्त जीव तुमहो अस भाष्यो । तुमहिँ सखा अपनो गुणि राख्यो ।
 अबै कछुक दिन जीवन तारी । पुनि ऐहौ मम धाम सिधारी ॥

दोहा—रामदास परि कमलपद, धान्यो शीश रजाय ॥

रहे जगत्में काल कछु, उधरत जीवनिकाय ॥ १ ॥

मम पितु औ मैं हूं गयो, तिनके दर्शन पाय ॥

पुरश्चरणके समयमें, चित्रकूटमें जाय ॥ २ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृते श्रीरामरसिका

वल्यां उत्तरचरित्रे पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

दोहा—अब श्रोता सुनिये सबै, सेवक रामचरित्र ॥

जाको वपु रघुपति धर्यो, मान्यो अपनो मित्र ॥ १ ॥

अहै एक मेरो गुठ ग्रामा । रह्यो ताहि महुँ ताकर धामा ॥

करै सदा संतन सेवकाई । रहै दीन धनहीन महाई ॥

प्रति अगहन सियराम विवाहा । करै माँगिकै महाउछाहा ॥

एक समय अगहन जब आयो । मांग्यो बहु घर धन नहिँ पायो ।

तब तियकी नथुनी लैलीन्ह्यो । दश मुद्रालै वणिजहिँ दीन्ह्यो ॥

दश मुद्रा मँहँ राम विवाहा । होत न लख्यो भयो दुखदाहा ॥
उतारि गयो पर्वत दुख पाई । वसौं भवन किमि वदन देखाई ॥
देखि तासु संकट रघुराई । तासु रूप लिय तुरत बनाई ॥
लै मुद्रा शत पंच सिधारे । आये सेवक रामदुवारे ॥
तुरतै तासु तिये गोहरायो । माँगि पंचशत मुद्रा लायो ॥
प्रभु विवाहको योग लगायो । धरहु भवनमँहँ चित्त चोरायो ॥
सोइ नथुनी दीन्ह्यो पुनि ल्याई । यहू वणिक सों लिय मुकताई ॥

दोहा—मैं अब गमनहुँ अनत कहूँ, औरहु संपति हेत ॥

पांच सात दिनमें अवशि, ऐहों वहुनि निकेत ॥ १ ॥
अस कहि चलिभे अंतर्ध्याना । तिय अपने पतिहीं को जाना ॥
दुसरे दिन वीते युगयामा । आयो सेवकरामहुँ धामा ॥
बैठगयो घर शीश नवाई । तियसों कह संपति नहिं पाई ॥
तिय कह कहहु कहा बौराई । तुमहिं पंचशत मुद्रा लाई ॥
दीन्ह्यो म्वहिं नथुनी मुकताई । अब कत कहत न संपतिपाई ॥
सेवक राम जके सुनि वानी । कबमैं दियो तोहिं नथ आनी ॥
अस कहि पुनि किय मनहिविचारा । विन हरिको असकृपाअगारा ॥
कियो जन्म भारि मैं सेवकाई । नारि गई सिंगरो फल पाई ॥
अस कहि तियहिं प्रदक्षिण दीन्ह्यो । परि पुहुमी प्रणाम पुनि कीन्ह्यो ॥
कीन्ह्यो राम विवाह उछाहा । मिथ्यो सकल मनको दुख दाहा ॥
तिनके पुत्र पौत्र हरिदासा । राखहिं एक रामकी आशा ॥

दोहा—अबलों करैं विवाह सुख, संत समाज बोलाय ॥

गहे अकिंचन वृत्ति सब, पूर करै रघुराय ॥ २ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरंजि

कावल्यां उत्तरचरित्रे षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

दोहा—सीवादास चरित्र अब, कहीं कछुक विस्तार ॥

जिनको रीवांगरमें, सब दिन रह्यो अगार ॥ १ ॥

वृत्ति परमहंसी तिनकेरी । राजा रंक रहैं सम हेरी ॥
जोकोउ भोजन हेतु बोलावै । तिनके घर प्रसादको पावै ॥
यहि विधि वीति गयो कछु काला । छके प्रेम महँ दशरथ लाला ॥
हिरदैशाह बुँदेल प्रधाना । ते रीवांको कियो पयाना ॥
सीवादास कुटीमहँ आयो । बार बार तिनको शिरनाथो ॥
यक दोनियामहँ दियो बतासा । कह्यो देहु यक यक सब पासा ॥
राजा मन विस्मित अति भयऊ । किमि पूजिहै सबन जो दयऊ ॥
दियो बताशा सबको बांटी । पाये सब जेहिं जस परिपाटी ॥
रहे द्रोण उतनई बतासा । जाने सब महिमा हरिदासा ॥
हिरदैशाह कही असि वानी । मोहिं अचल दीजै रजधानी ॥
सीवादास कह्यो मुसक्याई । राज्य तो अवधूतै यह पाई ॥
हिरदैशाह बहुरि अस भाखे । हम इत रहैं रावरे राखे ॥

दोहा—सीवादास कह्यो वचन, अबते छठयें मास ॥

राज्य करै अवधूतई, तुम्हरो विफल प्रयास ॥ १ ॥

तब दिवान राजै समुझाये । चलो भवन यतनै भरि पाये ॥
जो देहैं औरहु कछु शापा । तौपैहो अतिशय परितापा ॥
राजा बहुरि भवनकहँ आई । छठयें मासहिं गयो पराई ॥
तब अवधूत भूप पुनि आई । सीवादास चरण शिरनाई ॥
कीन्हें विनय राज्य प्रभु दीन्हा । सीवादास शीश कर कीन्हा ॥
कह्यो अटल कीजै अब राजू । भाइन भृत्यन सहित समाजू ॥
अंतर्देशा रही कछु काला । सो मेटी सब दशरथ लाला ॥
राज्य कबहुँ नहिं खंडित होई । तुम्हरो यश वरणी सब कोई ॥
तब अवधूत महल महँ आयो । राज्य कियो अति आनंद पायो ॥

ऐसे सीवादास महाना । भये सकल भागवत प्रधाना ॥
तिनके और चरित्र अपारा । मैवरण्यों नहिं भय विस्तारा ॥
औरहु जानिलेहु यहि भांती । सीवादास सिद्ध विख्याती ॥

दोहा—सुत अवधूत अजीत भो, भोजयासह सुत तासु ॥

विश्वनाथ सुत तासुभो, तासुत मैं तेहिं दासु ॥ २ ॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराज सिंहजूदेवकृतेश्रीरामर-
सिकावल्यां उत्तरचरित्रे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

दोहा—श्रीपंडित वर भागवत, तुलाराम जेहिं नाम ॥

तासु चरित वर्णन करौं, सुनहु सकल मतिधाम ॥ १ ॥

महाभागवत महाउदारा । तज्यो सकल सुत धन परिवारा ॥
वांचहिं नगरहिनगर पुराना । पावहिं धन पट भूषण नाना ॥
लाखन द्रव्य चढ़ै तहँ जोरे । देहिं साधु विप्रन कहँ सोरे ॥
मकर राशि आवै रवि जवहीं । वसैं प्रयाग जायकै तवहीं ॥
मास प्रयंत करहिं तहँ वासा । पूरहिं सब विप्रनकी आसा ॥
द्विज साधुन कहँ कौनेहुँ साला । देहिं सहस्रन बांटे दुशाला ॥
लाखन साधुन विप्रन काहीं । भोजन देहिं यथेष्ट सदाहीं ॥
नहिं कहँ राज्य न धन बहुताई । पूर करहिं तिनको यदुराई ॥
कहैं भागवत जेहिं पुरमाहीं । जुरैं सहस्रन यूह तहाँहीं ॥
कहिं श्लोक करहिं उपदेशा । रहै न पुनि अज्ञानको लेशा ॥
कहैं निशंक रंक नृप काहीं । हियते कोमल उपर रुखाहीं ॥
तजन लगे जब तनुहिं प्रयागा । तब बोले भरि कै अनुरागा ॥

दोहा—साधु पाँवरी लाय अब, धरहु हमारे शीश ॥

इष्टदेव जो साधु मम, तौ प्रसन्न जगदीश ॥ १ ॥

असकहि साधुन पद सुमिरि,वेणीतज्यो शरीर ॥
 तिनकी कथा अपारहै,को कहि लागै तीर ॥ २ ॥
 इति सिद्धिंश्रीमहाराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसिकावल्युं
 कलियुगखंडेउत्तरचरित्रेअष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

दोहा—एक साधु गोपीचरण, कियो सोन तट वास ।

देवक्षेत्रहै नाम जेहिं, मज्जन पाप विनास ॥ १ ॥

रहहि यकांत सुमिरि हरिकार्हीं।कोहुकर संग करहिं कहूँ नार्हीं॥
 पहिरि पादुका शैल उतंगा । उतरहि तुरत न डोलहि अंगा ॥
 कोहुसों कबहुँ भेंट है जाई । ताहि देहिं द्रुत साधु बनाई ॥
 भोजन करत कोउ नहिंजानै । रहैं गुप्त कोउ नहिं पहिंचानै ॥
 पहिरि पादुका जल महँ जाही । बूझहिं तासु पादुका नार्हीं ॥
 देउरा को दलजीत बघेला । तासों परचो एक दिन भेला ॥
 कह्यो देहु वाछी हमकार्हीं । कबहूँ तोरि विगारिहै नार्हीं ॥
 वर्ष दिवशकी सो दिय वाछी । रही साधु आश्रम सो आछी ॥
 दूध देइ सो विना वियाने । यह प्रसिद्ध सिंगरे जन जाने ॥
 एक दिना दलजीत बोलायो । सेवक एक बोलावन आयो ॥
 आप कह्यो मैं तहँ है आयो । पूँछ्यो जाय मृषा जो भायो ॥
 सो पूँछ्यो चलिक्कै तिन पार्हीं । कह्यो आइयो नाथ यहाँहीं ॥

दोहा—ऐसे चरित अनेकहैं, कहँलों करों वखान ॥

अबलों तेहिं गिरि पर रहत,करि वपु अंतर्ध्यान॥२॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसिका
 वल्युं उत्तरचरित्रेएकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

दोहा—कृष्णदासको कहतहौं,अव रमणीय चरित्र ॥

शरभंगाश्रममें रहे, तिनकी कला विचित्र ॥ १ ॥

अतिशय कृष्णचरण अनुरागी। निशि दिननामजपतसुखपागी ॥
 कृष्ण अनन्य उपासक सांचे । निशि दिन कृष्ण प्रेम रसराचे ॥
 वराग्राम यक रह्यो बवेला । नाम जासु शिरनेत नवेला ॥
 भाग्यविवश सो तेहिं शिषिभयऊ। तब ते तासु सुधरि सब गयऊ ॥
 गुरुनिकेत शिरनेत सिधारचो। यक दिन ऐसो वचन उचारचो ॥
 नाथ होत पारस केहिं देशा । तब बोले प्रभु है सब देशा ॥
 लहै न पारस जन विन भागा । पारस सत्य कृष्ण अनुरागा ॥
 असकहि लाये एक पषानो । ताहि कह्यो यहि पारसजानो ॥
 लैशिरनेत केरि तरवारी । दियो छुवाय पषाण निहारी ॥
 भै तुरंत तरवारि कनक की । कुंदनकी द्विति भई चमक की ॥
 कृष्णदास बोले तब वानी । यामें तेरी है कछु हानी ॥
 तेरी भाग्य सोन यक सेरा । सो ले कह्यो मानि अब मेरा ॥

दोहा—अस कहि सोना सेर भरि, शिरनेताहिं को दीन ॥

और भूमिमें फेंकिकै, पुनि लोहा तेहिं कीन ॥ १ ॥

सोई सोन लख्यो मैं नयना । अबलों बनो अहै तेहि अयना ॥
 पुनि प्रभु कह्यो सुनो शिरनेता । यक पारस पषाणके हेता ॥
 अस कहि उठि लै एक पषाना । दियो छुवाय पषाण चटाना ॥
 तुरत चटान सोनकी ह्वैगै । सहसन मनुष नयनते ज्वैगै ॥
 ऐसे चरित अनेकन तिनके । नहिं रसना कहि जात कविनके ॥
 मरणलगी मेरी पितृव्यानी । तब प्रभु ऐसी गिरा बखानी ॥
 देखौ कृष्ण मंत्र परभाऊ । सो चढ़िकै विमान भरि वाऊ ॥
 सुखी शुद्ध गोलोक सिधारी । करि प्रणाम मम ओर निहारी ॥
 सुनत वचन जन कौतुक माने । प्रभुके वचन सत्य सब जाने ॥
 यक दिन कह्यो जाहुँ गोलोका । लखि कलिकाल होत उर शोका ॥
 अस कहि प्रविशे गुहा मँझारी । पुनि नहिं तबते कटे सुखारी ॥

पितु कहि पद परि रोवन लागी । कह्यो पिता तुमहौ बड़भागी ॥
मोहि न कछु संपत्ति की हानी । लीजै सहस शक्र सम जानी ॥
दम्पति देखि अनूप विभूती । मान्यो वृथा न निज करवूती ॥

दोहा—पुनि सिय मंदिरको गये, दम्पति लहि सुख भौन ॥

रहे अवध कछु काल पुनि, किय मिथिलाको गौन ॥२॥

एक संतकी कहौ कहानी । देवादास नाम जेहि जानी ॥
चित्रकूट वासी हरि प्यारो । सकल शास्त्र को सत्य भँडारो ॥
चित्रकूट महँ तासु चरित्रा । जानत सिगरे संत पवित्रा ॥
युगलानन्य शरण यक संता । अबलों अवध माहिं विलसंता ॥
तिनको चरित जगत् सब जानै । सिगरे सज्जन करत बखानै ॥
रामप्रेम वारिधि महँ मगना । सिय सहचरी भाव चित लगना ॥
सरयू तीर अनन्य निवासी । दम्पति रास रुचिर रस रासी ॥
आश्रम वास करहिं सब काला । रचहिं अनेकन ग्रंथ विशाला ॥
सब विद्या महँ परम प्रवीना । लोभ मोह मद मत्सर हीना ॥
मोपर कृपा करहिं अति भारी । जगत् मित्र विज्ञान विचारी ॥
भाषा पारसि आदिक केरे । रचहिं रामपद सुभग घनेरे ॥
चित्रकूटमें जब मैं आयो । प्रभुके चरण जाय शिरनायो ॥

दोहा—मोको दिय उपदेश अस, भजु अनन्य रघुवीर ॥

सीतापति करुणा उदधि, हरहिं सकल भवपीर ॥ ३॥

इति सिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुराजसिंहजुदेवकृतेश्रीराम
रसिकावल्यां उत्तरचरित्रे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

दोहा—अब हिम्माति हियमें किये, हिम्मातिदास चरित्र ॥

नेसुक मैं वर्णन करौं, जानि विशेषि विचित्र ॥ १॥

पंतानगर नगीचहि ग्रामा । रघ्यो वरारिच अस तेहिं नामा ॥

हिम्माति दास रह्यो तेहि माहीं। बालहि ते विषयनि वश नाहीं ॥
 लैकर झाँझ कृष्ण पद गावै । प्रेम मग्न तनु भानु भुलावै ॥
 गयो एक कोउ शिष्य लेवाई । सुन्यो भागवत धनहुँ चढ़ाई ॥
 कछु संपाति लै विप्रन दीन्हे । कछु लै गवन भवन कहँ कीन्हे ॥
 मारगमें लूट्यो जब चोरा । हिम्मत ध्यायो नंदकिशोरा ॥
 झाँझ बजाय सुनावन लागे । चोर वित्तलै नेसुक भागे ॥
 भये सबै आंधर तेहिं ठाहीं । गिरे आय तिनके पदमाहीं ॥
 धनदै घरभरि तेहि पहुँचायो । तस्कर चैन पाय शिरनायो ॥
 तेऊ लहि तिनको उपदेशा । भजनलगे सब त्यागि रमेशा ॥
 एक दिन मंदिर केरि उवारी । मिली न हिम्माति भये दुखारी ॥
 गावनलागे झाँझ बजाई । तारा टूटि गिरचो महि आई ॥

दोहा—यक दिन हिम्मातिदास गृह, बैठ रहे युग याम ।

स्यंदन चढ़ि आवत भये, रघुनंदन तेहिं धाम ॥ १ ॥
 रहै नारि हिम्माति गृह नेरे । सो दोउ बंधुनको जब हेरे ॥
 द्वै बालक सुंदर मनहारे । हिम्माति दासहिं भवन सिधारे ॥
 अस कहि देखनहित सोआई । हिम्मातिदासहि गिरा सुनाई ॥
 द्वै बालक तुम्हरे गृह आये । देहु देखाय कहां बैठाये ॥
 हिम्माति कह्यो न मैं इत देखोतू केहि ठौर कौन विधि पेखे ॥
 सो करि शपथ कह्यो असि वानी।मैं देखे बालक छविखानी ॥
 तब हिम्माति परदक्षिण कीन्ह्यो । कह्यो जन्मफल तैं लैलीन्ह्यो ॥
 एक समय महँ हिम्मातिदासा । युगलकिशोर दरशकी आसा ॥
 आये मंदिरमहँ अधराता । बंद कपाट सुनी असि वाता ॥
 तब यह दोहा पढ्यो पुकारी । सो मैं इतही लिखौं विचारी ॥

दोहा—कपटिनके लागे रहैं, निशि दिन वज्र कपाट ॥

प्रेमिनके पद परतहीं, खुलत कपाट झपाट ॥ २ ॥

जब अस हिम्मतिदास उचारा । अनायास खुलिगये केंवारा ॥
हिम्मति युगलकिशोर विलोकी । फिरि आये निज भवन अशोकी
दोहा—एक समय तुलसी विपिन, गमने हिम्मतिदास ॥

तहँ राधा माधव दरश, करन भई उर आश ॥ ३ ॥

तब बैठे शृंगार बट, तरु तर द्वै व्रत कीन ॥

स्वप्न माहँ राधा रमण, ऐसो शासन दीन ॥ ४ ॥

तुमको तौ दीन्ह्यो दरश, मैं चलिकै बहु बार ॥

जहां जहां दीन्हें दरश, सो सब किये उचार ॥ ५ ॥

तब हिम्मति विश्वास करि, प्रेम मगन मन कीन ॥

बृंदावनके कुंजमें, यह दोहा पढ़ि दीन ॥ ६ ॥

घर घर गोपी गोपहैं, घर घर गौर्वैं ग्वाल ॥

घर घर हिम्मतिदासको, मिलत लाडिली लाल ॥ ७ ॥

तब राधा माधव युगल, प्रेम मगन तेहिं जानि ॥

मोरमुकुट मुरली लिये, दियो दरश छविखानि ॥ ८ ॥

तब हिम्मति दोहा पढ़्यो, राखी जनकी लाज ॥

ऐसे प्रभुको ध्याइये, हिम्मति सहित समाज ॥ ९ ॥

कवित्त—ताके भाग्य जागे जाके नयननमें लाल लागे, ललित
त्रिभंगी देखि रंक निधि पाईसी। कहत न बनै बयन सुने मनमो-
हनके, भूली कुलकानि भई अकह कहाईसी ॥ लोक गुरुलोक
अवलोकहूँ की सुधि नाहिं, युगल स्वरूप सिंधु लाय डुबका-
ईसी ॥ साहेब शरण पाय हिम्मति विलासी भये, तीनि लोक
साहिबीहू लागै लघुराईसी ॥ १ ॥

दोहा—पुनिहिम्मति यात्रा कियो, बृंदावनकी सर्व ॥

आये अपने भवनमें, माने मोद अखर्व ॥ १० ॥

शरदपूर्णिमाकोरहै, उत्सव एक दिन माहिं ॥

श्रीमूरांते अंगन विषे, दिय पधराय तहाहिं ॥ ११ ॥
 हिम्मति तहँ गावनलगे, मध्य संतकी भीर ॥
 प्रेम मगन तनु भान तब, ठारत आँखिन नीर ॥ १२ ॥
 जस जस हिम्मति डोलते, तस तस मूरतिडोल ॥
 यह कौतुक सब साधु लखि, बोले ऐसो बोल ॥ १३ ॥
 मति नाचहु हिम्मतिहुलसि, प्रभुको परत प्रयास ॥
 हिम्मति लजि बैठे तबै, सब साधुनके पास ॥ १४ ॥
 ऐसे हिम्मतिदासके, जानहु चरित अनेक ॥
 कहँलों मैं वर्णन करों, कह्यो यथामति नेक ॥ १५ ॥
 इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीरामरसिका
 बल्यांडत्तरचरित्रेचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

दोहा—एक अपूरव साधुभे, नाम सु पर्वतदास ॥
 तिनको अब श्रोता सुनहु, अतिसुंदर इतिहास ॥ १ ॥
 छप्पय—धमना नामक ग्राम रहै यक परम सुहावन ॥
 पर्वतदास सुसंत तहां निवसे जगपावन ॥
 तहँकोऊ यक संत आइ मांग्यो जलपानै ॥
 लागे पर्वतदास देन तब कह्यो सुजानै ॥
 निगुरा कर जल हम लेत नहिं, मंत्र लिहे जो होहु तुम
 तौ देहु सलिल पीवैं तुरत, विन गुरुजग जालिम जुलुम ॥
 बोले पर्वतदास मंत्र हम अब विनु लीन्हे ॥
 कैसे तुमको जानदेहिं विन पानहिं कीन्हे ॥
 यह सुनि साधू उठ्यो गह्यो मग अति अतुराई ॥
 पर्वत मानि गलानि लियो ताको पछिआई ॥
 तब साधु कह्यो तेहिं मुरुकि कै, मंत्र लेहु घर जायकै ॥

पर्वत कह तुमहीं देहु अब, काहि कहौ गोहरायकै॥२॥
 दै साधू उपदेश गयो कहूँ देशन काहीं ॥
 पर्वत लागे करन संत सेवन घरमाहीं ॥
 एक समय जगदीश चले पथि खर्च चुक्यो जब ॥
 कोउ साधू चलि आय तमाखू मांगतभो तब ॥
 तेहि कर प्रभु थैली देतभे, खाय तमाखू सो दियो ॥
 तहँ लै थैली पर्वत चले, खान तमाखू चित कियो॥३॥
 खोले थैली लखे रुपैया द्वै तेहिं माहीं ॥
 तब विस्मित है लिय भजाइ भो खर्च तहांहीं ॥
 मिले रुपैया युगल जबै तेहि दिनते तामै ॥
 पर्वत गुणि हरिकृपा गये जगदीशहि धामै ॥
 करिकै दरशन जगदीशको, आये जब निज ऐनमें ॥
 तब यह दोहा लागे पढ़न, साधु समाजहिचैनमें ॥ ४ ॥

दोहा—बहु पर्वत रघुनाथ पहँ, पहुँचायो हनुमान ॥
 जन पर्वत पहुँचाइहौ, तब वादिहौ बलवान ॥ १ ॥
 पर्वत मन कहँ रैन दिन, हरि कर मन अटकाव ॥
 क्षणसरतार अनर्थ कृत, वैश्य भूतकर न्याव ॥ २ ॥
 कोउ साधू पूँछ्यो तहां, वैश्य भूत कस न्याव ॥
 तब पर्वत बोल्यो हुलसि, सुनहु संत भरि चाव ॥ ३ ॥
 यक वानी पूरव धनी, भयो निर्धनी फेरि ॥
 कह्यो साधुपहँ असि कृपा, करहु होय धन ढेरि ॥४॥
 साधु कह्यो जो प्रेत यक, तुरत सिद्ध है जाय ॥
 तौ जो धन माँगिहौ अवशि, तुमको देहै आय ॥ ५ ॥
 वणिक प्रेतको सिद्ध किय, प्रेत कह्यो अनखाय ॥
 काम रीति करिहौ हमैं, तौ हम पटकब आय ॥ ६ ॥

कहै वणिक सो लायकै, देतो प्रेत तुरंत ॥
 सांस न पावै वणिक क्षण, भयो तवै भयवंत ॥ ७ ॥
 कह्यो साधुसों प्रेत मोहिं, मारन चहत तुरंत ॥
 देहु उपाय बताय अव, तुम करुणाकरसंत ॥ ८ ॥
 साधु कह्यो सौपोरको, देहु बाँस यक फोरि ॥
 द्वार गाड़ि तासों कहहु, उतरहु चढ़हु बहोरि ॥ ९ ॥
 सो उपाय वानी कियो, प्रेत रह्यो तेहि वंस ॥
 प्रेत वणिकको न्याव अस, भजै जो अस सोइ हंस १० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
 श्रीरामरसिकावल्ल्यां उत्तरचरित्रे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दोहा—एक ब्रह्मचारी रहे, ममतातागुरु सोय ॥

तासु कथा वर्णन करौं, सुनहु सबै मुदमोय ॥ १ ॥

हरि आशी काशीके वासी । महा विरक्त विश्व भय नाशी ॥
 हनुमत कवच वज्र पंजर को । महान्यास कीन्हे तप वर को ॥
 हरि वितरिक्त जाहि शिरनावै । मूरति तुरत फूटि सो जावै ॥
 रह्यो एक पूनाको राजा । चिमनाआपा नाम दराजा ॥
 भाग्यविवशसोऊ शिषि भयऊ । तेहि प्रभाव दानी ह्वै गयऊ ॥
 रहे ब्रह्मचारी यक ठामा । मिली नभिक्षा मांगे ग्रामा ॥
 नहि आई पूजनकी साजू । उपज्यो मनमहँ शोक दराजू ॥
 कह्यो शिष्यको ग्रामहि जाई । देहु अन्न कौनहुँ तुम लाई ॥
 शिष्य मांगि सामा कछु लायो । पात्र मृत्तिका ताहि चुरायो ॥
 पुनिकांटा यक कूपहि डाल्यो । कनकपात्र बहुभांति निकाय्यो ॥
 पूजाहि जो मूरति जगदीशा । तासों कह्यो नाय पद शीशा ॥
 नाथ नेम मम अहै महाना । खाहुँ महापरसाद न आना ॥

दोहा—जो अनन्य मैं दास तुव, मोपर दायाहोय ॥

महाप्रसादतुरंतहीं, अब मँगाइये सोय ॥ १ ॥

अस कहि जब नैवेद्य लगायो । महाप्रसाद तुरंतहि आयो ॥
देखि सकल कौतुक जनमाने । प्रभुहिं प्रणाम कियोसुखसाने ॥
एक समय गवने बंगाला । उत्सव तहां रह्यो तेहि काला ॥
रही तहां लाखन जन भीरा । कोउ बंगाली यक मतिधीरा ॥
लियो ब्रह्मचारी बोलवाई । गये नाथ गुणि आदरताई ॥
तहँ मृत्तिका मूर्ति कालीकी । विरची जन शोभा शालीकी ॥
तेहि चढ़ाय लै चलै विमाना । जय जय माच्यो शोर महाना ॥
कन्हिे सब प्रणाम मतिधामा । प्रभुसों कह्यो करहु परणामा ॥
प्रभु कह मोहिं नप्रणामकरावहु । काहे अपयश शीश चढ़ावहु ॥
तब रोषितभे सब बंगाली । बोले वचन अहै यह जाली ॥
नहिं नावै अंवाकहँ शीशा । माने कौन काहि निज ईशा ॥
कह्यो ब्रह्मचारी तब वाणी । मेरो प्रभुहै शारंगपाणी ॥

दोहा—जो मैं शीश नवाइहौं, तुम्हरी देवी काहिं ॥

सहस टूकहे मूर्ति यह, फूटि जई क्षणमाहिं ॥ २ ॥

तब बोले सब वचन प्रचंडा । करै ब्रह्मचारी पाखंडा ॥
पकरि शीश सब देहु नवाई । याकी सब कलई खुलि जाई ॥
दौरे सकल नवावन शीशा । तब सुमिरचो प्रभुश्रीजगदीशा ॥
हँसत हँसत जोरियुग हाथा । कालीको नायो निज माथा ॥
माथ नवावत मूर्ति उदारा । भई तुरंतहि टूक हजारा ॥
बंगाली मारन हित धाये । तब तिनको प्रभु वचन सुनाये ॥
नहिं आयुध गड़िहै तनुमाहिं । हौं पकरे रहिहौं इतनाहिं ॥
अस कहि पहिरि पादुका पायन।उतरि गये गंगा अति चायन ॥
भये चकित सिंगरे बंगाली । सबकी मिटी गर्वकी लाली ॥